RNI No. : UPHIN/2023/84344 ₹ : 30/-

प्रेरणा विचार

मासिक
फाल्गुन-चैत्र, विक्रम संवत् 2081 (मार्च -2025)
पृष्ठ-36, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित

आद्युकल पोंगाला

उत्सवों के रंग पर्यावरण के संग

डोलयात्रा

होली

सरस्वती शिशु मन्दिर

सी–41, सेक्टर–12, नोएडा (गौतमबुद्ध नगर)
दूरभाष: 0120–4545608
ई–मेलः ssm.noida@gmail.com
वैबसाइड: www.ssmnoida.in

विद्यालय की विशेषताऐं

- भारतीय संस्कृति पर आधारित व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास की शिक्षा।
- नवीन तकनीकी शिक्षा प्रोजैक्टर, कम्प्यूटर, सी.सी.टी.वी., कैमरा आदि की सुविधा।
- आर.ओ. का शुद्ध पेय जल, सौर ऊर्जा, विशाल क्रीड़ा स्थल व हरियाली का समुचित प्रबन्ध।
- प्रखर देशभक्ति के संस्कारों से युक्त उत्तम मानवीय व चारित्रिक गुणों के विकास पर बल।
- सामाजिक चेतना एवं समरसता विकास के लिए विविध क्रियाकलाप।
- विद्यालय को श्रेष्ठतम बनाने की दृष्टि से आपके सुझाव सादर आमन्त्रित हैं।

दिनेश गोयल	प्रदीप भारद्वाज	असित त्यागी	प्रकाश वीर
(अध्यक्ष)	(व्यवस्थापक)	(कोषाध्यक्ष)	(प्रधानाचार्य)

प्रेरणा विचार

वर्ष -3, अंक - 03

RNI No. UPHIN/2023/84344

संरक्षक
अनिल त्यागी

प्रबंध निदेशक
बिजेन्द्र कुमार गुप्ता

सलाहकार मंडल
श्याम किशोर, डॉ. अनिल निगम
अशोक सिन्हा

संपादक
डॉ. मनमोहन सिंह शिशौदिया

कार्यकारी संपादक
डॉ. प्रियंका सिंह

प्रबन्ध संपादक
मोनिका चौहान

अध्यक्ष प्रीति दादू की ओर से मुद्रक/प्रकाशक डॉ. अनिल त्यागी द्वारा चंद्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा. लि. नोएडा से मुद्रित तथा प्रेरणा भवन, सी-56/20, सेक्टर-62 नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित

संपादकीय कार्यालय
प्रेरणा शोध संस्थान न्यास
प्रेरणा भवन, सी-56/20, सेक्टर-62,
नोएडा - 201309
दूरभाष : 0120 4565851
मोबाइल : 9354133708,9354133754
ईमेल : prernavichar@gmail.com
वेबसाइट : www.prernasamvad.in

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा नोएडा की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा।

संपादक

इस अंक में

डिजिटल क्रांति और महाकुम्भ 2025 एक नया युग - 07

अंग्रेजी बनाम हिन्दू पंचांग -10

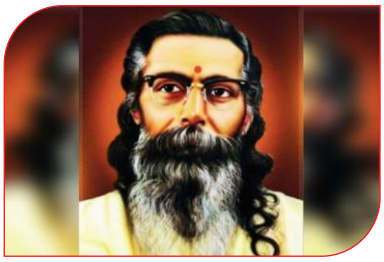

जब ब्रह्मतत्व में विलीन हुए श्री गुरुजी -22

गणेश शंकर विद्यार्थी का जीवन पत्रकारिता के लिए प्रकाश पुंज - 30

महाकुंभ ने रचा इतिहास : योगी सरकार का अतुल्य प्रयास 05

उत्सवों के रंग, पर्यावरण के संग 08

कुम्भ की आध्यात्मिक, सांस्कृतिक वैज्ञानिक व खगोलीय प्रासंगिकता.....12

कुम्भ मेला 2025 : संस्कृति, आध्यात्म एवं अर्थोपार्जन का संगम.....14

सामजिक समरसता के अग्रदूत स्वामी दयानंद जी 16

स्वामी दयानंद का घर वापसी अभियान.....18

संविधान की तीन धाराएं और हिन्दुओं की पीड़ा.....20

झूठ की बुनियाद पर खड़ा भवन धराशाई.....24

दिल्ली चुनाव का संदेश और भाजपा की विजय.....26

जलवायु परिवर्तन और हिमालय:भारत में ग्लेशियर और हिम पिघलने के प्रभाव.....28

पीएम मोदी की विदेश यात्रा.....32

अंतरराष्ट्रीय जगत में भारत की स्थिति.....33

मैदान में छा गए उत्तराखंड के खिलाड़ी 103 पदक जीतकर रचा इतिहास 34

प्रेरणा विचार पत्रिका की ओर से सभी पाठकों को रंगों के त्यौहार

होली

की हार्दिक शुभकामनाएं

भारतीय स्व के पुनर्जागरण का युग

वर्तमान समय भारतीय स्व के पुनर्जागरण तथा भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की पुनरप्रतिष्ठा का काल है। अयोध्या में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के भव्य मंदिर की स्थापना, पुनर्जागरण की इस यात्रा का मील का एक पत्थर है। तेरह जनवरी से आरंभ हुए प्रयागराज कुम्भ में उमड़ा आस्था का जनसैलाब पुनर्जागरण के यज्ञ में इन श्रद्धालुओं की आहुति ही है। प्रयागराज कुम्भ ने जहां अनेकों विश्व कीर्तिमान स्थापित किए वहीं कुछ स्वार्थी तत्वों और सनातन विरोधियों ने इसे बदनाम करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। न्यूयॉर्क टाइम्स ने प्रयागराज कुम्भ को ऐसा आयोजन कहा है जिसमें पूरी दुनिया से श्रद्धालु, पर्यटक, राजनीतिज्ञ एवं विश्वप्रसिद्ध लोगों ने भाग लिया। अंतर्राष्ट्रीय मीडिया में इसे त्योहारों का त्योहार भी कहा गया है। गंगा, यमुना सरस्वती के संगम पर डुबकी लगाने वाला हर श्रद्धालु पापों से मुक्ति की कामना तो करता ही है, वह सनातन में अपनी आस्था भी व्यक्त करता है और भारतीय जीवन मूल्यों की स्थापना का संकल्प भी लेता है। यह गौरव का विषय है कि प्रयागराज कुम्भ दुनिया का किसी भी तरह का सबसे बड़ा मानवीय जमावड़ा बना। साथ ही इस आयोजन से उत्तर-प्रदेश को 3 लाख करोड़ की आमदनी का आंकड़ा कुम्भ के आर्थिक महत्व को भी रेखांकित करता है। वास्तव में कुम्भ जैसे आयोजनों से भारत की एकता-अखंडता और भी बलवती होती है। भारत और उत्तर प्रदेश की वर्तमान सरकारों ने न केवल भारतीय जनमानस के मनोभावों को समझा, बल्कि उनका सम्मान करते हुए इस आयोजन के लिए ऐसा उत्साह दिखाया जो पहले कभी नहीं दिखा। जहां वर्ष 2013 के कुम्भ में 12 करोड़ श्रद्धालु कुम्भ पहुंचे वहीं इस बार यह आंकड़ा 65 करोड़ के पार रहा। उम्मीद की जानी चाहिए कि भविष्य की सरकारें 2025 के कुम्भ आयोजन से प्रेरणा प्राप्त कर अपना दिग्दर्शन भी करेंगी।

इसी माह 30 मार्च से भारतीय नववर्ष (विक्रम संवत 2082) की शुरुआत भी होगी। यही वर्ष प्रतिपदा, पुराणों के अनुसार सृष्टि के प्रारंभ का दिवस है और इसी तिथि से भारत में काल गणना भी प्रारंभ हुई। भारतीय काल गणना एवं इस पर आधारित कैलेंडर भारतीय ज्ञान परंपरा की अमूल्य देन है जो पूर्णतः वैज्ञानिक एवं प्रामाणिक है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हमारी तिथियों का संदर्भ हमारा अपना पंचांग बने। स्व के पुनर्जागरण में भारत के अपने पड़ोसियों और दुनिया के प्रमुख देशों के साथ संबंध महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेंगे। दुनिया में जारी उथल-पुथल के बीच में अमेरिका के राष्ट्रपति पद पर डोनल्ड ट्रम्प की नियुक्ति भी विश्व में भारत का स्थान निर्धारित करने में अहम भूमिका अदा करेगी। ट्रम्प की यह उद्घोषणा कि उनके भारत के साथ अच्छे संबंध हैं, जो बाइडन के समय आपसी संबंधों में जमी बर्फ के पिघलने के संकेत हैं। भारत-अमेरिका संबंधों की घनिष्ठता इस तथ्य से विदित है कि ट्रम्प के राष्ट्रपति बनने के बाद विदेश मंत्री सुब्रह्मण्यम जयशंकर की अमेरिकी समकक्ष मार्को रुबीओ और प्रधानमंत्री मोदी की ट्रम्प के साथ हुई मुलाकात प्रथम कुछ मुलाकातों में शामिल हैं। सांस्कृतिक पुनरप्रतिष्ठा के लक्ष्य भेदन के लिए भारत को बांग्लादेश जैसे तख्तापलट और हिंदुओं के साथ हिंसा की संभावना को शून्य रखने की क्षमता विकसित करनी होगी।

आशा है कि प्रेरणा विचार का मार्च अंक सुधि पाठकों की अपेक्षा पर खरा उतरेगा। ■

महाकुंभ ने रचा इतिहास
योगी सरकार का अतुल्य प्रयास

डॉ. सौरभ मालवीय
एसोसिएट प्रोफेसर, लखनऊ विश्वविद्यालय

प्रयागराज में 13 जनवरी को पौष पूर्णिमा स्नान के साथ कुंभ मेले का शुभारंभ हुआ था तथा 26 फरवरी को महाशिवरात्रि के अंतिम स्नान के साथ इसका समापन हो गया। इस समयावधि में 65 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं ने स्नान किया।

उत्तर प्रदेश के प्रयाग में आयोजित महाकुंभ सफलतापूर्वक संपन्न हो गया। चूंकि उत्तर प्रदेश धार्मिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध राज्य है, इसलिए प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ धार्मिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों पर विशेष ध्यान दे रहे हैं। इसके अंतर्गत योगी सरकार ने महाकुंभ के भव्य आयोजन के लिए 6,990 करोड़ रुपये आवंटित किए थे। उन्होंने महाकुंभ के सफल आयोजन के लिए संबंधित अधिकारियों को विशेष निर्देश दिए थे।

उल्लेखनीय है कि प्रयागराज में 13 जनवरी को पौष पूर्णिमा स्नान के साथ कुंभ मेले का शुभारंभ हुआ था तथा 26 फरवरी को महाशिवरात्रि के अंतिम स्नान के साथ इसका समापन हो गया। इस समयावधि में 65 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं ने स्नान किया। अमृत स्नान 14 जनवरी को मकर संक्रांति पर, 29 जनवरी को मौनी अमावस्या पर, 3 फरवरी को बसंत पंचमी पर, 12 फरवरी को माघी पूर्णिमा पर तथा 26 फरवरी को महाशिवरात्रि पर हुआ। इन विशेष दिनों में श्रद्धालुओं की अत्यधिक भीड़ अधिक देखी गई।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह, रक्षामंत्री राजनाथ सिंह, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यानाथ सहित देश के लगभग सभी राजनेता, अभिनेता, खिलाड़ी, व्यवसायी आदि संगम में स्नान कर चुके हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संगम में डुबकी लगाई। इसके पश्चात उन्होंने सोशल मीडिया पर लिखा कि महाकुंभ में आज पवित्र संगम में डुबकी लगाकर मैं भी करोड़ों लोगों की तरह धन्य हुआ। मां गंगा सभी को असीम शांति, बुद्धि, सौहार्द और अच्छा स्वास्थ्य दें।

गृहमंत्री अमित शाह ने संगम में स्नान करने के पश्चात कहा कि कुंभ हमें शांति और सौहार्द का संदेश देता है। कुंभ आपसे यह नहीं पूछता है कि आप किस धर्म, जाति या संप्रदाय से हैं। यह सभी लोगों को गले लगाता है। इससे पूर्व उन्होंने सोशल मीडिया पर लिखा था कि महाकुंभ' सनातन संस्कृति की अविरल धारा का अद्वितीय प्रतीक है।

रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने भी संगम में दुबकी लगाई। उन्होंने सोशल मीडिया पर लिखा-

गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरू॥

आज तीर्थराज प्रयागराज में, भारत की शाश्वत आध्यात्मिक विरासत और लोक आस्था के प्रतीक महाकुंभ में स्नान-ध्यान करके स्वयं को कृतार्थ अनुभव कर रहा हूं।

उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने विगत दिसंबर में महाकुंभ के दृष्टिगत प्रयागराज में लगभग 5500 करोड़ रुपये की विभिन्नम विकास परियोजनाओं का लोकार्पण एवं शिलान्यास किया था। प्रधानमंत्री ने कहा कि यह विश्व के सबसे बड़े समागमों में से एक है, जहां 45 दिनों तक चलने वाले महायज्ञ के लिए प्रतिदिन लाखों श्रद्धालुओं का स्वागत किया जाता है और इस अवसर के लिए एक नया नगर बसाया जाता है। प्रयागराज की धरती पर एक नया इतिहास लिखा जा रहा है।

प्रधानमंत्री ने इस बात पर बल दिया कि महाकुंभ, देश की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक पहचान को नए शिखर पर ले जाएगा। उन्होंने कहा कि एकता के ऐसे महायज्ञ की चर्चा संपूर्ण विश्व में होगी।

उन्होंने कहा कि महाकुंभ हमारी आस्था, आध्यात्म और संस्कृति के दिव्य पर्व की विरासत की जीवंत पहचान है। हर बार महाकुंभ धर्म, ज्ञान, भक्ति और कला के दिव्य समागम का प्रतीक होता है। संगम में डुबकी लगाना करोड़ों तीर्थ स्थलों की यात्रा के बराबर है। पवित्र डुबकी लगाने वाला व्यक्ति अपने सभी पापों से मुक्त हो जाता है। आस्था का यह शाश्वत प्रवाह विभिन्न सम्राटों और राज्यों के शासनकाल, यहां तक कि अंग्रेजों के निरंकुश शासन के दौरान भी कभी नहीं रुका और इसके पीछे प्रमुख कारण यह है कि कुंभ किसी बाहरी ताकतों द्वारा संचालित नहीं होता है। कुंभ मनुष्य की अंतरात्मा की चेतना का प्रतिनिधित्व करता है, वह चेतना जो भीतर से आती है और भारत के हर कोने से लोगों को संगम के तट पर खींचती है। गांवों, कस्बों, शहरों से लोग प्रयागराज की ओर निकलते हैं और सामूहिकता और जनसमूह की ऐसी शक्ति शायद ही कहीं और देखने को मिलती है। एक बार महाकुंभ में आने के बाद हर कोई एक हो जाता है, चाहे वह संत हो, मुनि हो, ज्ञानी हो या आम आदमी हो और जाति-पंथ का भेद भी खत्म हो जाता है। करोड़ों लोग एक लक्ष्य और एक विचार से जुड़ते हैं। महाकुंभ के दौरान विभिन्न राज्यों से अलग-अलग भाषा, जाति, विश्वास वाले करोड़ों लोग संगम पर एकत्र होकर एकजुटता का प्रदर्शन करते हैं। यही उनकी मान्यता है कि महाकुंभ एकता का महायज्ञ है, जहां हर तरह के भेदभाव का त्याग किया जाता है और यहां संगम में डुबकी लगाने वाला हर भारतीय एक भारत, श्रेष्ठ भारत की सुंदर तस्वीर पेश करता है।

उन्होंने भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक परंपरा में कुंभ के महत्व पर बल दिया और बताया कि कैसे यह हमेशा से संतों के बीच महत्वपूर्ण राष्ट्रीय मुद्दों और चुनौतियों पर गहन विचार-विमर्श का मंच रहा है। उन्होंने कहा कि जब अतीत में आधुनिक संचार के माध्यम मौजूद नहीं थे, तब कुंभ महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तनों का आधार बन गया, जहां संत और विद्वान राष्ट्र के कल्याण पर चर्चा करने के लिए एकत्र हुए और वर्तमान और भविष्य की चुनौतियों पर विचार-विमर्श किया, जिससे देश की विचार प्रक्रिया को नई दिशा और ऊर्जा मिली। आज भी कुंभ एक ऐसे मंच के रूप में अपना महत्व बनाए हुए है, जहां इस तरह की चर्चाएं जारी रहती हैं, जो पूरे देश में सकारात्मक संदेश भेजती हैं और राष्ट्रीय कल्याण पर सामूहिक विचारों को प्रेरित करती हैं। भले ही ऐसे समारोहों के नाम, उपलब्धि और मार्ग अलग-अलग हों, लेकिन उद्देश्य और यात्रा एक ही है। कुंभ राष्ट्रीय विमर्श का प्रतीक और भविष्य की प्रगति का एक प्रकाश स्तंभ बना हुआ है।

कुंभ सहायक : केंद्र एवं राज्य सरकारों ने महाकुंभ में भाग लेने वाले श्रद्धालुओं की सुविधाओं का विशेष ध्यान रखा। कुंभ के लिए पहली बार एआई और चैटबॉट तकनीक के उपयोग को चिह्नित करते हुए 'कुंभ सहायक' चैटबॉट का शुभारंभ किया गया, जो ग्यारह भारतीय भाषाओं में संवाद करने में सक्षम है। इससे लोगों को बहुत लाभ हुआ।

योगी सरकर ने महाकुंभ से पूर्व प्रयागराज के ऐतिहासिक मंदिरों का जीर्णोद्धार करवाया। इसके साथ-साथ मंदिरों का नवीनीकरण भी किया गया। इसके अतिरिक्त राज्य में हरित क्षेत्र के विस्तार को बढ़ावा दिया गया। विशेषकर प्रयागराज जिले में सड़कों के किनारे पौधे लगाए गए। यह भी उल्लेखनीय है कि स्वच्छता पर भी विशेष ध्यान दिया गया। क्षेत्रों को पॉलीथिन से मुक्त रखने का भी प्रयास किया गया।

कुंभवाणी : उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गत 10 जनवरी को प्रयागराज स्थित सर्किट हाउस से महाकुंभ 2025 को समर्पित आकाशवाणी के विशेष एफएम चैनल 'कुंभवाणी एवं कुंभ मंगल ध्वनि का भी लोकार्पण किया। उन्होंने कहा था कि कुम्भवाणी द्वारा प्रसारित आंखों देखा हाल उन लोगों के लिए विशेष रूप से लाभदायक होगा, जो कुंभ में भाग लेने के लिए प्रयागराज नहीं आ सकेंगे। यह इस ऐतिहासिक महाकुंभ के माहौल को देश व दुनिया तक पहुंचाने में सहायक होगा।

उल्लेखनीय है कि योगी सरकर ने महाकुंभ से पूर्व प्रयागराज के ऐतिहासिक मंदिरों का जीर्णोद्धार करवाया। इसके साथ-साथ मंदिरों का नवीनीकरण भी किया गया। इसके अतिरिक्त राज्य में हरित क्षेत्र के विस्तार को बढ़ावा दिया गया। विशेषकर प्रयागराज जिले में सड़कों के किनारे पौधे लगाए गए। यह भी उल्लेखनीय है कि स्वच्छता पर भी विशेष ध्यान दिया गया। क्षेत्रों को पॉलीथिन से मुक्त रखने का भी प्रयास किया गया। इसके अंतर्गत महाकुंभ में सिंगल यूज्ड प्लास्टिक पर पूर्ण रूप से प्रतिबंध लगा दिया गया था। मेले में प्राकृतिक उत्पाद जैसे दोना, पत्तल, कुल्हड़ एवं जूट व कपड़े के थैलों के प्रयोग को बढ़ावा दिया गया। योगी सरकार ने श्रद्धालुओं की प्रत्येक सुविधा का ध्यान रखा। इसके अंतर्गत यातावात की भी समुचित व्यवस्था की गई। प्रयागराज आने वाली बसों, रेलगाड़ियों एवं वायुयान की संख्या में वृद्धि की गई। महाकुंभ के लिए रेलवे द्वारा लगभग 1200 रेलगाड़ियां तथा परिवहन विभाग द्वारा सात हजार बसों का संचालन किया गया।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने स्वयं हवाई जहाज से मेला स्थल का निरीक्षण किया। इसलिए यह कहना उचित है कि महाकुंभ के सफल आयोजन के लिए योगी सरकार बधाई की पात्र है।

डिजिटल क्रांति और महाकुम्भ 2025
एक नया युग

डॉ. गौरव कुमार
सहायक आचार्य, गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय
गेटर नोएडा

डिजिटलीकरण से कुंभ का आयोजन अधिक सुव्यवस्थित और सुरक्षित हुआ, लेकिन इसके कुछ नकारात्मक प्रभाव भी सामने आए। जहाँ एक ओर डिजिटल नवाचारों ने आयोजन को आधुनिक रूप दिया, वहीं साइबर सुरक्षा उल्लंघनों ने नई चिंताओं को जन्म दिया।

महाकुम्भ मेला भारत की प्रमुख धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं में से एक है। वर्ष 2025 का महाकुम्भ अपने ऐतिहासिक महत्व के साथ-साथ डिजिटल नवाचारों की वजह से भी विशेष रहा। पहली बार डिजिटल तकनीक का व्यापक स्तर पर उपयोग किया गया, जिससे श्रद्धालुओं की सुविधा, सुरक्षा और प्रशासनिक प्रबंधन में महत्वपूर्ण सुधार हुआ। इस बार ई-टिकटिंग और बायोमेट्रिक एंट्री जैसी आधुनिक सुविधाओं ने श्रद्धालुओं की पहचान सुनिश्चित करने और भीड़ नियंत्रण में प्रशासन की मदद की। जीपीएस ट्रैकिंग और ड्रोन निगरानी जैसी तकनीकों ने जहां सुरक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ किया, वहीं इलेक्ट्रोनिक हेल्प डेस्क और डिजिटल गाइडेंस सिस्टम ने यात्रियों को सही दिशा में मार्गदर्शन दिया। वर्चुअल दर्शन की सुविधा ने उन लोगों को लाभ पहुँचाया जो व्यक्तिगत रूप से मेले में शामिल नहीं हो सके। RFID ट्रैकिंग सिस्टम ने बच्चों और वृद्धों की सुरक्षा सुनिश्चित की, जबकि ई-स्वास्थ्य कार्ड और डिजिटल हेल्थ सेंटर ने मेडिकल सुविधाओं को अधिक प्रभावी बनाया।

हालांकि, डिजिटल क्रांति के साथ साइबर सुरक्षा की चुनौतियाँ भी सामने आईं। कई श्रद्धालुओं ने डेटा चोरी और ऑनलाइन धोखाधड़ी की शिकायतें दर्ज कराईं। फिशिंग और फर्जी वेबसाइटों के कारण आर्थिक नुकसान भी देखने को मिला। सोशल मीडिया के माध्यम से अफवाहों का प्रसार हुआ, जिससे प्रशासन को भीड़ नियंत्रण में दिक्कतों का सामना करना पड़ा।

डिजिटलीकरण से कुंभ का आयोजन अधिक सुव्यवस्थित और सुरक्षित हुआ, लेकिन इसके कुछ नकारात्मक प्रभाव भी सामने आए। जहाँ एक ओर डिजिटल नवाचारों ने आयोजन को आधुनिक रूप दिया, वहीं साइबर सुरक्षा उल्लंघनों ने नई चिंताओं को जन्म दिया। तकनीकी खामियों के चलते कभी-कभी अव्यवस्था भी उत्पन्न हुई।

भविष्य में साइबर सुरक्षा को और मजबूत करने के लिए प्रशासन को ठोस कदम उठाने होंगे। श्रद्धालुओं को सार्वजनिक वाई-फाई से बचने, केवल आधिकारिक वेबसाइटों से टिकट बुक करने और किसी भी संवेदनशील डेटा को अनजाने स्रोतों के साथ साझा न करने जैसी सावधानियों को अपनाने की जरूरत है। RFID और ट्रैकिंग सिस्टम का सही उपयोग और साइबर हेल्पलाइन के प्रति जागरूकता भी महत्वपूर्ण होगी।

महाकुम्भ 2025 ने दिखाया कि कैसे डिजिटल तकनीक का उपयोग सांस्कृतिक आयोजनों को अधिक सुरक्षित और प्रभावी बना सकता है। हालाँकि, इसके साथ ही साइबर सुरक्षा से जुड़े जोखिम भी बढ़े हैं। भविष्य में, प्रशासन को इन मुद्दों को ध्यान में रखते हुए डिजिटल समाधानों को और अधिक सुरक्षित और प्रभावी बनाने की दिशा में कार्य करना होगा, जिससे श्रद्धालुओं को सुगम और सुरक्षित अनुभव मिल सके।

उत्सवों के रंग, पर्यावरण के संग

नीलम भागी
लेखिका, जर्नलिस्ट, ब्लॉगर, ट्रैवलर

फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की प्रतिप्रदा से शुरू होने वाली विश्व प्रसिद्ध 84 कोसी(252किमी) नैमिषारण्य परिक्रमा चक्रतीर्थ या गोमती नदी में स्नान करके, गजानन को लडडू का भोग लगा कर यात्रा शुरू करते हैं। रोज आठ कोस पैदल चलते हैं। 15 दिन तक ये यात्रा चलती है।

कृष्ण भगवान अति व्यस्त होने के कारण कई दिनों तक वे राधा जी से मिलने नहीं पहुँचे तो राधा जी बहुत उदास हो गईं। जिसका असर प्रकृति पर भी पड़ने लगा। हरियाली मुरझाने लगी। यह देख कृष्ण राधा से मिलने पहुँच गए। उन्हें देख राधा जी बहुत खुश हुई और गोपियाँ भी चहकने लगीं और प्रकृति भी खिल उठी। कृष्ण ने राधा को छेड़ते हुए एक फूल तोड़ कर मारा। बदले में राधा जी ने भी फूल मारा। अब दोनों ओर से फूल एक दूसरे को मारे जाने लगे। इस खेल में ग्वाल गोपियाँ भी फूल खेलों प्रतियोगिता में शामिल हो गए। उस दिन फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीय तिथि थी। तब से इस दिन को फुलैरा दूज (1 मार्च) के रूप में मनाया जाता है। मंदिरों को फूलों से सजाते हैं। इस दिन बिना महूर्त के शुभ काम किए जाते हैं। इसी दिन श्रीरामकृष्ण की 190वीं जयंती बेलूर मठ में मनाई जायेगी।

चायचार कुट 7 मार्च मिजोरम का फसल कटाई के अंत का उत्सव है। युवा आग के चारों ओर नृत्य करते हैं। यह कठोर सर्दियों की बिदाई और बसंत ऋतु की शुरूआत का भी संकेत देता है। यहां का चाय नृत्य मुख्य आर्कषण है। सांस्कृतिक प्रर्दशन और व्यंजन पर्यटकों को इस उत्सव में शामिल होने के लिए आकर्षित करते हैं।

अरट्टू महोत्सव 7 से 9 मार्च केरल के अमबालापुझा के कृष्ण मंदिर में यह दस दिनों तक चलता हैं। मंदिर के आसपास मेले की तरह दुकाने सजती हैं और अंदर समारोह आयोजित होते हैं। जुलूस इस उत्सव के मुख्य आर्कषण हैं। पल्लीवेट्टू के दिन विशाल भोज आयोजित होता है जिसका मुख्य व्यंजन पायसम होता है।

विरूपाक्ष कार महोत्सव हम्पी स्मारक समूह के द्वारा विरूपाक्ष मंदिर का वार्षिक रथ उत्सव है। 7, 13, 21, और 28 मार्च को देवता को सजा कर जलूस निकाला जाता है। यह त्यौहार देवताओं का दिव्य विवाह समारोह भी है।

अर्न्तराष्ट्रीय योग महोत्सव (9 से 15 मार्च) परमार्थ निकेतन आश्रम ऋषिकेश में कई अर्न्तराष्ट्रीय और स्थानीय योग उत्साही लोगों को आकर्षित करता है। जहाँ योग कार्यशालाएँ, स्वस्थ खाना पकाने की कक्षाएँ, शास्त्रीय नृत्य प्रदर्शन, आध्यात्मिक आचार्यों के व्याख्यान आदि का आयोजन होता है।

आमलकी एकादशी व्रत 10 मार्च को भगवान विष्णु के साथ आंवले के वृक्ष की भी पूजा की जाती है। क्योंकि आंवला विष्णु जी को बहुत पसंद है। इसलिए इसे आंवला एकादशी कहते हैं। काशी में इसे रंगभरी एकादशी भी कहते हैं। कहते हैं कि इस दिन पहली बार शिवजी मां पार्वती को लेकर काशी पहुंचे थे। इसी कारण इस दिन महाकाल और पार्वती जी की यात्रा निकाली जाती है और रंग खेला जाता है।

दुनिया का सबसे बड़ा 'आट्टुकल पोंगाला' (13 मार्च) महिला उत्सव।। अट्टुकल भवानी मंदिर तिरुअनंतपुरम केरल में मनाया जाता है। इन्हीं दिनों मलयालम महिना पंचाग के अनुसार तिथि निकलने पर दस दिन का केरल और तमिलनाडु का उत्सव आट्टुकल पोंगाला अपना नाम दुनिया में महिलाओं का सबसे बड़ा जमावड़ा होने के कारण 2009 में गिन्नी बुक ऑफ वर्ड रिकार्ड में दर्ज करवा चुका है।

फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की प्रतिप्रदा से शुरू होने वाली विश्व प्रसिद्ध 84 कोसी

(252 किमी) नैमिषारण्य परिक्रमा चक्रतीर्थ या गोमती नदी में स्नान करके, गजानन को लडडू का भोग लगा कर यात्रा शुरू करते हैं। रोज आठ कोस पैदल चलते हैं। 15 दिन तक ये यात्रा चलती है।

रामचरितमानस में भी लिखा है

तीरथ वर नैमिष विख्याता,

अति पुनीत साधक सिद्धि दाता।

फाल्गुन मास की पूर्णिमा को यात्रा सम्पन्न होती है। और....बैर उत्पीड़न की प्रतीक होलिका मुहूर्त पर जलाई जाती है और प्रहलाद यानि आनन्द बचता है जिसे बहुत हर्षोल्लास से शिव के गण बने, एक दूसरे को शिव के बराती बनाते हैं। शिव की बारात (होली का जुलूस) निकालने के बाद सब नए कपड़े पहन कर एक दूसरे के घर होली मिलने जाते हैं। जिसके लिए महिलाएं तीन चार दिन पहले से मीठे, नमकीन बनाकर तैयारी करती हैं। मुंबई से लेकर कई राज्यों की होली देखी पर नौएडा में मनाई पहली होली 1983 ने तो भारत एक जगह कर दिया था।

याओसांग मणिपुर के मेइती लोगों द्वारा मनाया जाने वाला एक जीवंत उत्सव है। यह एकता और सदभाव का प्रतीक है। बसंत के आगमन का स्वागत रंगीन पारंपरिक कपड़े पहनकर और नांच गा कर मनाते हैं।

केरल में होली को मंजल कुली कहते हैं जिसका मतलब हल्दी स्नान है।

डोलयात्रा 14 मार्च सिक्किम का होली से मिलता जुलता उत्सव है और उसी दिन मनाया जाता है। यह राधा कृष्ण के प्रेम के जश्न के रूप में मनाया जाता है। राधा कृष्ण की मूर्तियों को जुलूस में ले जाया जाता है। लोग गुलाल उड़ाते हुए नाचते हैं। महिलाएं गाते हुए चलती हैं। पुरुष सभी पर रंग डालते हैं।

होयसल महोत्सव कर्नाटक के अन्य स्थानों और प्राचीन मंदिरों में मनाया जाने वाला नृत्य और संगीत का उत्सव है। मंदिरों को मिट्टी के दियों से सजाया जाता है। पूरे दिन सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इस त्यौहार में अपनी पारंपरिक कला रूपों का जश्न मनाना है।

होला मोहल्ला 15 मार्च को विशेषकर आनंदपुर साहब में सिक्खों द्वारा मार्शल आर्ट एवं बहादुरी का प्रर्दशन है। होलगढ़ किले में रंग बिरंगे मुकाबले होते हैं।

गणगौर राजस्थान और आसपास के राज्यों में मनाया जाने वाला 15 दिवसीय (15 मार्च से 31 मार्च) उत्सव है। पति की लम्बी आयु और अच्छे स्वास्थ्य के लिए देवी पार्वती को समर्पित विवाहित महिलाओं द्वारा मनाया जाने वाला यह उत्सव है। अविवाहित लड़कियाँ सुयोग्य पति की कामना के लिए प्रार्थना करतीं हैं। उत्सव का अंतिम दिन बहुत आर्कषक होता है। नृत्य संगीत के साथ मूर्तियों को विसर्जन के लिए ले जाया जाता है।

होली के पांचवें दिन महाराष्ट्र में मछुआरा समुदाय के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इस दिन नृत्य गायन के कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। इस जश्न को शिमगो के नाम से जाना जाता है। देश के कई हिस्सों में होली का उत्सव फाल्गुन पूर्णिमा को शुरू होकर रंग पंचमी को समाप्त होता है। जिस उत्साह से हम उत्सव मनाते हैं, उसी तरह 20 मार्च विश्व गौरैया दिवस को आंगन में फुदकने वाली गौरैया को बचाने के लिए, महानगरों में रहने वाले आर्टीफिशियल घोंसला लगाते हैं।

मायोको त्योहार 21 मार्च अरूणाचल प्रदेश के अपतानी, डिबो हिजा, हरिबुला आदिवासियों द्वारा मनाया जाने वाला मुख्य त्योहार है। दोस्ती और सद्भावना के इस उत्सव में आसपास के सभी गाँव इक्ट्ठे होते हैं। 10 दिनों तक चलने वाले इस फसल उत्सव में यदि बारिश आ जाये तो और शुभ माना जाता है। त्यौहार के दिनों में लोग अपने घर के दरवाजे खुले रखते हैं। यह उत्सव प्रकृति पूजा है।

केरल और तमिलनाडु का उत्सव आट्टुकल पोंगाला अपना नाम दुनिया में महिलाओं का सबसे बड़ा जमावड़ा होने के कारण 2009 में गिन्नी बुक ऑफ वर्ड रिकार्ड में दर्ज करवा चुका है।

22 मार्च विश्व जल दिवस पर प्रण करना होगा 'न जल बरबाद करेंगे और न करने देंगे।' शीतला अष्टमी को मौसम बदलने के कारण इसमें ताजा प्रसाद नहीं बनता एक दिन पहले बनता है उसे बसोड़ा कहते हैं। वही देवी को भोग लगता है और दिनभर खाया जाता है। देवी से प्रार्थना की जाती है कि चेचक, खसरा आदि से बचाये।

भंडारा महोत्सव 30 मार्च को खंडोबा मंदिर जेजुरी में मनाया जाने वाला, यह उत्सव मेला देश के शीर्ष मेले त्यौहारों में है। जहां मंदिर से नदी तक देवता की शोभायात्रा निकाली जाती है। श्रद्धालुओं पर ढेरों हल्दी पाउडर डाला जाता है। इस रंगीन उत्सव को देखना बहुत भाता है। इसलिए इसे प्रसिद्ध हल्दी उत्सव भी कहते हैं। चैत्र मास की शुक्ल प्रतिपदा हिन्दू नवसंवत्सर से चैत्र नवरात्र शुरू होते हैं। देश भर में अलग अलग नाम से उत्सव मनाने में प्रकृति का भी सहयोग होता है। पेड़ पौधे नई-नई कोंपले और फूलों से लदे होते हैं। गुड़ी पड़वा उत्सव महाराष्ट्रीयन और कोंकणी मनाते हैं। गुड़ी पड़वा से अगले दिन चेटी चंड सिंधी हिन्दुओं का प्रमुख त्यौहार है। जिसे सिंधी झूलेलाल के जन्मदिन के रूप में मनाते हैं।

मत्सय जयंती 31 मार्च चैत्र नवरात्र के समय और गणगौर के साथ मेल खाता है। यह भगवान विष्णु के मत्सय अवतार की वर्षगांठ है इस उत्सव पर विशेष पूजा, अर्चना और अभिषेक कर मत्स्य पुराण, विष्णु सहस्रनाम का पाठ किया जाता है। आन्ध्र प्रदेश के नागालपुरम में सोलहवीं शताब्दी में विजयनगर साम्राज्य के शासक श्री कृष्णदेव राय द्वारा निर्मित श्री वेदनारायण स्वामी मंदिर भगवान मत्स्य को समर्पित है। इस पावन अवसर पर यहां भव्य आयोजन किया जाता है।

जल बचाएं, गौरेया बचाएं क्योंकि उत्सवों के रंग तो पर्यावरण और लोककथाओं के संग ही हैं।

अंग्रेजी बनाम हिन्दू पंचांग

अशोक कुमार सिन्हा
सचिव, विश्व संवाद केन्द्र, अवध

भारतीय नव वर्ष के संबंध में हमारा आत्मगौरव जागे। हम इसकी महत्ता को समझ कर इसको पुनः स्थापित करने में समर्थ हो सके। इसके लिए समाज को खड़ा होना पड़ेगा

ईसवी सन के पूर्व पाश्चात्य देशों में ईसापूर्व 753 में रोम नगर की स्थापना के साथ ही रोमन संवत प्रारंभ हुआ। इस पूर्णतया त्रुटिपूर्ण संवत में केवल 10 माह तथा 304 दिन होते थे। रोमन सम्राट नूमा पांपीसियस ने सात सौ ईसापूर्व इसमें जनवरी तथा फ़रवरी दो माह जोड़कर 355 दिन का वर्ष प्रचलित किया। 46 ईसापूर्व जूलियस सीजर ने वर्ष में 365 दिन का प्रावधान किया। कालांतर में सन् 1582 में पोप ग्रेगरी ने एक आदेश द्वारा माह के चार अक्टूबर को 15 अक्टूबर के रूप में घोषित कर दिया और आदेश दिया कि जो सन् 4 से विभाजित होगा उस वर्ष की फरवरी में 29 दिन होंगे। तब से इस काल गणना को ग्रेगेरियन कैलेंडर कहते हैं। पहले इस कैलेंडर में वर्ष का आरंभ 25 मार्च से होता था परन्तु सन् 1752 ईस्वी सन् में चर्च और ब्रिटिश राज्य की मिलीभगत से वर्ष का आरंभ 1 जनवरी से होने लगा।

ग्रेगोरियन कैलेंडर में मासों का नामकरण जनवरी से जून तक रोमन देवी देवताओं के नाम पर व जुलाई-अगस्त महीनों के नाम जूलियस सीजर और उनके पौत्र आगस्टस के नाम पर हैं। सितंबर, अक्टूबर, नवंबर तथा दिसंबर में चार संख्यावाचक हैं जिनका अर्थ सातवां, आठवां, नवां तथा दसवां है किन्तु इन्हें नवां दसवां ग्यारहवां तथा बारहवां मास कहा जाता है। फरवरी के 28 दिन और हर चौथे वर्ष उनतीस दिन का कर देने पर भी प्रतिवर्ष नौ मिनट ग्यारह सेकेंड के समय को समायोजित करने की कहीं इसमें कोई व्यवस्था नहीं है। कृष्ण पक्ष, शुक्ल पक्ष, सूर्य के उत्तरायण, दक्षिणायन होने की कोई व्यवस्था ईसाई काल गणना में नहीं है। ईसाई मासों का ऋतुओं से भी कोई संबंध नहीं है। इन सब तथ्यों से यह निष्कर्ष निकलता है कि ईसवी सन् स्वाभाविक रूप से अवैज्ञानिक एवं अप्रामाणिक है।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा वस्तुतः कालगणना का पर्व है। भारतीय कालगणना खगोलीय घटनाओं पर आधारित है। इसमें परमाणु से लेकर कल्प तक की विशुद्ध वैज्ञानिक काल गणना की गई है। चैत्र मास शुक्ल पक्ष में ही ब्रह्माजी ने सृष्टि की संरचना करते हुए सूर्य, चंद्रमा, पृथ्वी आदि नक्षत्रों का सृजन किया तथा उनकी गति को आधार बनाकर काल गणना प्रारंभ की। भारतीय नव वर्ष का प्रथम दिवस चैत्र शुक्ल प्रतिपदा पृथ्वी माता के जन्म, ब्रह्माजी के द्वारा काल गणना का प्रारंभ, नवरात्र के प्रथम दिवस, मत्स्यावतार, मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री रामचंद्र जी के राज्यारोहण, धर्मराज युधिष्ठिर के राजतिलक, विदेशी आक्रान्ताओं को खदेड़ने वाले शकारि विक्रमादित्य, सिंध के प्रसिद्ध जननायक संत झूले लाल, गुरु अंगद देव के पावन जन्मदिवस, महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा आर्य समाज प्रस्थापना एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार की पवित्र जयंती से संबद्ध है।

सूर्य की इस सृष्टि से पूर्व त्रैलोक्य में अमावस्या का घोर अंधकार व्याप्त था। दिनकर के अस्तित्व में आने के साथ ही पृथ्वी पर आकाश का आरंभ हुआ। ब्रह्माजी द्वारा

इस सृष्टि रचना तथा काल गणना का सम्पूर्ण उपक्रम प्रकृति से तादात्म्य रखकर किया गया। चैत्र कृष्ण प्रतिपदा के स्थान पर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के नवसंवत्सर के प्रारंभ का कारण उक्त दिवस का घटाटोप अंधकार को विदीर्ण कर सूर्य निःसृत प्रकाशपुंज किरणों का बिखरना रहा है। भारतीय काल गणना के अनुसार इस पृथ्वी को जन्म धारण किये हुए अब तक 1 अरब, 95 करोड़, 58 लाख, 85 हजार, 126 वाँ वर्ष, कलियुग का युगाब्द 5126 वां वर्ष, शक संवत 1947 और विक्रमी संवत का 2082 वां वर्ष प्रारंभ हो रहा है।

पृथ्वी अपनी धुरी पर 1600 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से परिभ्रमण करती हुई सूर्य की परिक्रमा करती है। एक परिक्रमा में वह अपना झुकाव दो बार परिवर्तित करती है जो क्रमशः उत्तर तथा दक्षिण अयन कहलाते हैं। उत्तरायण का प्रारंभ मकर संक्रांति से तथा दक्षिणायन का प्रारंभ कर्क संक्रांति से होता है। दिन रात का प्रवर्तन तथा ऋतु परिवर्तन पृथ्वी के अक्ष परिभ्रमण के परिणाम है। पृथ्वी के अक्ष की प्रवणता के कारण ही अधिक गर्मी या सर्दी पड़ती है। अक्ष की प्रवणता ० से लेकर 23 अंश कला तक होती है। इसे क्रांति कहते हैं। भारतीय कालगणना के अनुसार एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय का समय दिवस या वार कहलाता है अतः जिस वार को जो दिन होता है रात्रि भी उसी वार की होती है। पाश्चात्य काल गणना में यह वार मध्यरात्रि 12 बजे बदल जाती है। हिंदू कैलेंडर के अनुसार एक मास में 30 तिथियां होती हैं। शुक्ल पक्ष की पंद्रहवीं तिथि अमावस्या कही जाती है। जो तिथि सूर्योदय काल में होती है पंचांग में वही तिथि लिखी जाती है। जिस नक्षत्र में चंद्रमा को प्राप्त होता है उस आधार पर क्रम से 12 मास चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, अषाढ़, श्रावण, भाद्रपक्ष, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ एवं फाल्गुन मास पड़ते हैं। इस समय छह मनुओं का काल पूर्ण होकर सातवें मनुकाल के सत्ताईस महायुग व्यतीत हो चूके हैं ।

ब्रिटिश शासनकाल के दौरान जिस तरह भारतीय संस्कृति को असभ्य, बर्बर, आदिम और मृतप्राय बताने का सफल कुचक्र चला गया और जिससे आज भी वामपंथी चिंतक प्रभावित हैं, उसे दूर करने का वातावरण धीरे धीरे बनने लगा है। सन् 1817 में ईस्ट इंडिया कंपनी और ब्रिटिश सरकार द्वारा एक साजिश रची गई कि भारत के बारे में ब्रिटिश संसद को यह अवगत कराया जाए कि कम्पनी भारत में अच्छा शासन दे रही है। परंतु कंपनी के लाभांश का अधिकांश भाग असभ्य, बर्बर और आदिम भारतीय समाज को शिक्षित करने में व्यय हो रहा है। इस साजिश के तहत कुल छह खंडों में एक किताब लिखवाई गई जिसका नाम था - "द हिस्ट्री ऑफ ब्रिटिश इंडिया"। इसके लेखक जेम्स मिल थे। ये सज्जन कभी भारत नहीं आए, न ही इनको किसी भी भारतीय भाषा का ज्ञान था। इन्होंने न तो किसी भारतीय विद्वान से या देसी विदेशी भारतीय जानकार से बात की न ही अनेकों प्रयास के बाद भी इंग्लैंड में इन्हें पादरी तक की नौकरी मिली थी। ये ब्रिटिश संसद को अपनी पुस्तक के माध्यम से भारत के बारे में नकारात्मक तथ्य देते रहे। फलतः कंपनी ने इन्हें 800 पाउंड के ऊँचे वेतन के ओहदेदार पद से नवाजा। बाद में इन्हें 2 हजार पाउंड तक वेतन दिया जाने लगा। जेम्स ने अपने बेटे और जाने माने राजनैतिक दार्शनिक जान स्टुअर्ट मिल को भी कंपनी में नौकरी पर लगवा दिया। दोनों का काम ब्रिटिश संसद को भारत की नकारात्मक बातों से प्रभावित कर कंपनी की सत्ता को बनाए रखना था। इस पुस्तक में इस ईस्ट इंडिया कम्पनी ने अपना भविष्य देखा तथा इसे प्रशासनिक गीता के रूप में मान्यता दी गई। भारत आने वाले हर ब्रिटिश अधिकारी को इसे 3 महीने तक भली भांति पढ़कर आत्मसात करना होता था। रही सही कसर अमेरिकी लेखिका कैथरीन मेयो ने "मदर इंडिया" लिख कर पूरी की जो यूरोप और अमेरिका में इतनी लोकप्रिय हुई कि इसके छपने के एक साल के भीतर इक्कीस संस्करण छपे। कोई दस लाख से ज्यादा लोगों ने इसे पढ़ा।

ब्रिटिश शासनकाल के दौरान जिस तरह भारतीय संस्कृति को असभ्य,बर्बर, आदिम और मृतप्राय बताने का सफल कुचक्र चला गया और जिससे आज भी वामपंथी चिंतक प्रभावित हैं उसे दूर करने का वातावरण धीरे धीरे बनने लगा है।

विगत वर्षों से सेक्युलरिज्म के चक्कर में तथा मैकाले शिक्षा के कारण हम अपनी अस्मिता को भूल गए। रही सही कसर वामपंथियों द्वारा रचित भ्रमित इतिहास के विचार ने पूरी की। भारत के सर्वधर्म सम भाव तथा सर्वे भवन्तु सुखिनः वाली विश्व कल्याण की विचारधारा को जानबूझ कर पीछे धकेला गया। हिंदू नववर्ष मनाना सांप्रदायिकता की श्रेणी में रखा गया। भारतीय विश्वविद्यालयों में परोसा जाने वाला ज्ञान भी विदेशों से आयातित ज्ञान पर आधारित है। केंद्र में सत्ता परिवर्तन के बाद स्थिति बदली है। भारतीय नव वर्ष के संबंध में हमारा आत्मगौरव जागे, हम इसकी महत्ता को समझ कर इसको पुनः स्थापित करने में समर्थ हो सकें। इसके लिए समाज को खड़ा होना पड़ेगा। सौभाग्य से आत्मचेतना जागृत करने का प्रयास अब तेज गति पकड़ रहा है। आज समय आ गया है जब भारत के विद्वान फिर से भारतीय संस्कृति और ज्ञान को पुनर्स्थापित करें। पश्चिमी वितंडावाद से प्रभावित भारत के वामपंथी बुद्धिजीवियों को वास्तविकता से परिचित करायें। हम सब भारतीयों का पुनीत कर्तव्य है कि हम स्वयं तथा आगे की पीढ़ी को प्रयास करके संस्कारित करें तथा भारतीय हिंदू नववर्ष को निष्ठा तथा पूर्ण कर्मकांड से उत्साहित होकर पूरे विश्व में मनायें ।

कुम्भ की आध्यात्मिक, सांस्कृतिक वैज्ञानिक व खगोलीय प्रासंगिकता

डॉ. ओम प्रकाश पाण्डेय
अंतरिक्ष वैज्ञानिक

कुम्भ की यह भारतीय परम्परा, उस खगोलीय ज्ञान से प्रेरित है जो ब्रह्माण्डीय उर्जा व मानवी चेतना के दुर्लभ संयोग को सुलभ कराती है। यह मात्र धार्मिक प्रथा तक सीमित नहीं है बल्कि यह खगोल विज्ञान, उर्जा भँवर, चेतना को जागृत कर आत्मा को उर्ध्वरेता करने की वह महायात्रा है।

महाकुम्भ मेला। यह कोई साधारण मेला या धार्मिक आयोजन मात्र ही नहीं हो सकता है जहाँ करोड़ों श्रद्धालु इतने भाव से प्रति बारह वर्ष के लम्बे अन्तराल के पश्चात एक निश्चित समय पर एकत्रित होकर माह भर के साधना द्वारा दिव्य उर्जा से आप्लावित हो उठते हों। निश्चित रुप से इस सहस्त्राब्दियों पुरानी परम्परा के पीछे जरूर कोई Strong Hidden Mystery या Scientific Reasoning होनी चाहिये। इस परम्परा के प्रति अपार जन समूह की दृढ़ आस्था के पीछे छिपे गहरे वैज्ञानिक व अध्यात्मिक कारणों से आज की पीढ़ी को भी अवगत होना चाहिए। आज हम इसी सन्दर्भ में चर्चा करेगें।

यह महान पर्व प्रति बारह वर्ष पश्चात ही क्यों लगता है? कुम्भ का अर्थ होता है घड़ा या कलश। पौराणिक आख्यानों के अनुसार जब देवता व असुर, अमृत के लिए समुद्र मन्थन कर रहे थे तब समुद्र मथने से अमृत कलश निकला। परन्तु देवताओं व असुरों द्वारा इस कलश को हस्तगत करनें की 12 दिनों की रस्साकसी में अमृत की कुछ बूंदें छिटक कर पृथ्वी पर गिर गई व जिन स्थानों पर यह गिरी उसी स्थान पर कुम्भ का आयोजन पर प्रति बारह वर्षों के अन्तराल पर किया जाता है। अब 12 वर्षों का तर्क इस आधार पर सुनिश्चित किया गया कि देवताओं का एक दिन भारतीय काल गणना के अनुसार मानवी एक वर्ष का होता है। यहां व्यवहृत हुये देवता व असुर दोनों ही शब्द एक रूपक (Metafor) है, जिसका आशय प्रकृति के दैवी तत्त्व (Positive Elements) व आसुरी तत्त्व (Negative Elements) से जुड़ा है। इसी प्रकार समुद्र व अमृत कलश भी एक रूपक है, जिसका आशय Cosmic Vortex (ब्रह्माण्डीय भँवर) व Cosmic Energy Center से जुड़ा है। इसी तरह बूंदों का आशय Flow of Energy Necter से है। अब Astral conditioning के अनुसार 12 वर्षों के अन्तराल पर आयोजित किये जाने वाले कुम्भ पर्व का संबंध बृहस्पति, सूर्य व चन्द्र के विशेष खगोलीय alienment से भी दिखता है। जिसमें प्रधान भूमिका बृहस्पति की होती है जिसका एक नाक्षत्रिक परिभ्रमण काल बारह वर्ष की अवधि में पूर्ण होता है, अतः कुम्भ का पर्व भी बारह वर्ष के अन्तराल पर घटित होता है। बृहस्पति की स्थिति जब बृष, सिंह व कुम्भ राशि में हो और सूर्य भी उसी समय मकर, मेष व सिंह राशि में स्थित हों तब कुम्भ पर्व होता है।

इस खगोलीय स्थिति के अनुरूप जब बृहस्पति बृष राशि में और सूर्य मकर राशि में हो तब माघ महिने में प्रयागराज के गंगा-यमुना के संगम तट पर, जब बृहस्पति कुम्भ राशि में व सूर्य मेष राशि में हो तब बैशाख महीने में हरिद्वार के गंगा तट पर कुम्भ पर्व का आयोजन होता है। इसी प्रकार जब बृहस्पति सिंह राशि में व सूर्य कर्क राशि में हो तो भाद्रपद मास में नासिक के गोदावरी नदी के तट पर तथा इसके ठीक नौ महीने पश्चात जब सूर्य मेष राशि में आ जाए व बृहस्पति सिंह राशि में ही रहें तब बैसाख के ही महीने में उज्जैन के क्षिप्रा नदी के तट पर सिंहस्थ कुम्भ का आयोजन होता है। अब इन चारों पवित्र स्थलों पर प्रत्येक ३ वर्ष के

अन्तरालों पर क्रमानुसार कुम्भ मेले का आयोजन होता रहता है।

पुरातन काल में मानचित्रों के सटीक निर्माण व समुद्री यात्राओं के माध्यम से गन्तव्य तक पहुँचने के लिए ध्रुव के अतिरिक्त अक्षांशों (Latitudes) व रेखांशों (Longitudes) के निर्धारण की भी परिकल्पना की गई। ध्रुव के सहयोग से अक्षांशों व विषुव दिवस में एक ही समय घट रहे मध्यरात्र, सूर्योदय, मध्याह्न व सूर्यास्त के विन्दुओं को क्रमशः 0°, 90°, 180° व 270° मानकर रेखांशों का निर्धारण किया गया। अब आकलन के उस क्षण सूर्योदय होने के कारण 90° रेखांश अपने आप महत्वपूर्ण हो गया। भारत के नासिक, उज्जयिनी, हरिद्वार व प्रयागराज इसी 90° रेखांश के निकट अर्थात क्रमशः 90°, 92°, 94°, 96° पर पड़ते हैं, जिसके कारण इन स्थानों का सीधा सम्पर्क बृहस्पति, सूर्य और चन्द्रमा की भी विशेष स्थिति में आकाश गंगा के Super Massive Black Hole से हो जाता है। भारतीय शास्त्रों में आकाशगंगा के इस केन्द्र को 'विष्णु नाभि' कहा गया है और यही क्षेत्र ब्रह्माण्डीय उर्जा का अजस्र स्रोत (Ultimate Source) भी है। इसी कारण कुम्भ के काल में इन ग्रहों कि विशेष स्थिति ब्रह्माण्डीय उर्जा के प्रवाह को अदृश्य उर्जा पथ (Lay Line) के माध्यम से इन स्थानों पर बने Energy Vortex (उर्जा भँवर) जैसे विन्दुओं पर केन्द्रित (Concentrate) कर देते हैं।

Quantum Physics में Energy VorteÛ उसे माना गया है जहाँ Time & Space की Singularity घटती है। यह Singularity वहाँ घटती है जहाँ Time - Space दोनों एक साथ विलीन हो जाते हैं। इस स्थिति में गुरुत्व (Gravity) इतना अधिक हो जाता है कि भौतिकी के सभी नियम निरर्थक हो जाते हैं क्योंकि इस विन्दु पर समय की गति (Speed of Time½ व स्थान का माप (Measure of Space) एकदम से बदल जाता है। Time o Space का यह विरूपण (Distortion), श्रद्धालुओं के आत्मबोध को अध्यात्मिकता की श्रेष्ठता से अवगत कराने में सहयोगी होते हैं। इसका

कुम्भ के पवित्र स्थल पर नियमित आराधना, अनुष्ठान व मंत्रोच्चार से वहाँ प्रवाहित हो रही नदियों के जल में शुद्धता, नवीनीकरण व प्रत्यावर्तन के दिव्य गुणों का समावेश सम्पर्क में आये व्यक्ति की भावनाओं को अध्यात्मिकता से ओतप्रोत करने की क्षमता से परिपूर्ण होती है।

कारण यह है कि इस विन्दु पर प्रवाहित हो रही जल की धारा इससे विशिष्ट रूप से प्रभावित हो उठती है, अतः ब्रह्माण्डीय उर्जा से अप्लावित उस जलराशि के सम्पर्क में आये लोगों के शारीरिक, मानसिक व वैचारिक चेतना जागृत हो अध्यात्मिकता की ओर उन्मुख होने लगती है।

हमारा शरीर पंचतत्वों से ही बना है। पंचतत्वों में से एक जल की मात्रा, हमारे शरीर में सबसे अधिक है। जल में एक विलक्षण क्षमता होती है कि वह उर्जा व ध्वनियों के कंपन को ग्रहण कर अपनी संरचना को बदलने के साथ सम्पर्क में आये लोगों की भावनाओं (Emotions) को भी प्रभावित कर सकती है। नदी स्तोत्र में उल्लेखित है- 'काया पवित्रो कुरुयात् मनसा निर्मलं शुचि'। इन सभी विषय पर उनकी बहुचर्चित पुस्तक "Hidden Mystery of Water" में उन्होंने विस्तार से वर्णन किया है। इस तथ्य के भी अनेक प्रमाण पाये गये हैं कि विशिष्ट सिद्ध पुरुष द्वारा मंत्र संस्कार से पूरित किये गये जल को ग्रहण करने से रूग्ण लोगों को भी स्वास्थ्य लाभ हुआ। इस आधार पर यदि अनुभूत किया जाय तो यह सहज समझ में आता है कि कुम्भ के पवित्र स्थल पर नियमित आराधना, अनुष्ठान व मंत्रोच्चार से वहां प्रवाहित हो रही नदियों के जल में शुद्धता, नवीनीकरण व प्रत्यावर्तन के दिव्य गुणों का समावेश सम्पर्क में आये व्यक्ति की भावनाओं को अध्यात्मिकता से ओतप्रोत करने की क्षमता से परिपूर्ण होती है।

'अम्बितमे नदीतमे देवितमे सरस्वति। अप्रशस्ता इवस्मसि प्रशस्तिमम्ब नस्कृधि।।' ।।ऋग्वेद 2/41/16।।

अर्थात्- माताओं, नदियों व देवियों में श्रेष्ठतम सरस्वती, हम अप्रशस्त है, हम सभी को प्रशस्त करें माता।

इस प्रार्थना का आशय व उद्देश्य यह है कि ज्ञान शुद्ध और पूर्ण हो तो अव्यक्त ही रहता है, क्योंकि सामूहिक चेतना प्रशस्त हो तो अभिव्यक्ति की आवश्यकता नहीं और वेद का ऋषि यह याचना करता है कि अदृश्य ही सही परन्तु सामूहिक चेतना के रूप में, ज्ञान की अधिष्ठात्री, सरस्वती की उपस्थिति हम सभी पर बनी रहे। अनंत काल से ऋषि-मुनि, साधु-सन्त व श्रद्धालु गण कुम्भ के विशिष्ट काल में जिस पवित्र तट पर एकाग्रभाव से सामूहिक स्नानादि द्वारा साधना-अनुष्ठान करते चले आये हों, उस भाव भूमि में प्रवाहित जल धारा में ग्रहण करने की विशिष्ट क्षमताओं के कारण ज्ञान दायिनी सरस्वती अनायास ही अदृश्य भाव से प्रवाहमान रहती हैं। इस आधार पर गंगा-यमुना की प्रकट संगम स्थली, प्रयागराज का कुम्भ इसलिये विशेष महत्वपूर्ण हो जाता है की श्रद्धालुओं को यहाँ सरस्वती का अदृश्य उपस्थिति, वैदिक मंत्र 'तिस्रो देव्याः' (अर्थात् गंगा, यमुना व सरस्वती के त्रिवेणी) का सामीप्य प्रदान कर उनकी चेतना को दिव्य अनुभूति के उच्चतर स्तर की ओर प्रेरित कर देती है।

वस्तुतः कुम्भ की यह भारतीय परम्परा, उस खगोलीय ज्ञान से प्रेरित है जो ब्रह्माण्डीय उर्जा व मानवी चेतना के दुर्लभ संयोग को सुलभ कराती है। यह मात्र धार्मिक प्रथा तक सीमित नहीं है बल्कि यह खगोल विज्ञान, उर्जा भँवर, चेतना को जागृत कर आत्मा को उर्ध्वरेता करने की वह महायात्रा है, जो व्यष्टि को समष्टि से जोड़कर सृष्टि के विराटत्व को आत्मसात करने के साथ परमेष्ठी से एकाकार होने का विलक्षण संयोग सभी श्रद्धालुओं को उपलब्ध कराती है। अतः कुम्भ के इस महत्व को भारत के अबालबृद्ध नर-नारी ही नहीं बल्कि पूरे विश्व को, मानव से महामानव में रूपान्तरित होने का अमूल्य अवसर समझ कर गहराई से आत्मसात कर धन्य होना चाहिए।

कुम्भ मेला 2025 : संस्कृति, आध्यात्म एवं अर्थोपार्जन का संगम

प्रो. अखिलेश मिश्र
प्राचार्य, शम्भूदयाल पीजी कॉलेज, गाजियाबाद

इस बार भी कुम्भ में शामिल होने के लिए 192 देशों को न्योता भेजा गया है। दुनिया भर के महत्वपूर्ण एयरपोर्ट, व्यापारिक स्थलों पर कुम्भ मेला के आमंत्रण वाली बड़ी बड़ी होर्डिंग्स एवं संस्थाओं तथा समूहों से व्यक्तिगत सम्पर्क किया जा रहा है।

प्रयागराज कुम्भ' गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में दुनिया के सबसे सबसे बड़े मानवीय समागम के रूप में बहुत पहले ही प्रतिस्थापित हो चुका है। 'प्रयागराज कुम्भ' नगरी, गंगा, यमुना एवं सरस्वती के पावन सुरम्य त्रिवेणी संगम पर अस्थायी रूप से 50 दिन के लिए बसायी जाती है। इसकी तैयारी, वर्षा ऋतु खत्म होने के तुरंत बाद शुरू हो जाती है। इस पवित्र संगम स्थल पर, देश दुनिया भर से आये धार्मिक श्रद्धालु, पर्यटक, व्यापारी, नौकरशाह, राजनेता, शिक्षाविद्, अन्वेषक, वैज्ञानिकों का विशाल जन समूह देख मन हिलोरें ले भाव विह्वल होने लगता है।

वैसे तो कुम्भ, देश में चार प्रमुख स्थानों (नासिक, उज्जैन, हरिद्वार एवम प्रयागराज) पर आयोजित होता है, किन्तु प्रयागराज कुम्भ अन्य कुम्भों की तुलना में कई कारणों से काफी अलग है। जैसे, दीर्घावधिक कल्पवास की परंपरा केवल प्रयाग में है इसीलिए इसे तीर्थों का तीर्थ कहा गया है। त्रिवेणी संगम, पृथ्वी का केन्द्र होने के कारण ऐसी मान्यता है कि, भगवान ब्रह्मा ने सृष्टि-सृजन हेतु प्रयागराज को यज्ञ के लिए चुना था। यहां किये गये धार्मिक क्रियाकलापों एवं तपस्यचर्या का प्रतिफल अन्य तीर्थ स्थलों से अधिक है। मत्स्य पुराण के अनुसार, महर्षि मारकण्डेय युधिष्ठिर से कहते हैं कि यह स्थान समस्त देवताओं द्वारा विशेषतः रक्षित है। यहां एक मास तक प्रवास करने, पूर्ण परहेज रखने, अखण्ड ब्रह्मचर्य धारण करने से और अपने देवताओं व पितरों को तर्पण करने से समस्त मनोकामनायें पूर्ण होती हैं। मान्यता के अनुसार यहां स्नान करने वाला व्यक्ति अपनी 10 पीढ़ियों को पुनर्जन्म के चक्र से मुक्त कर देता है और मोक्ष प्राप्त कर लेता है।

प्रयाग कुम्भ सहस्त्राब्दियों से चला आ रहा है किन्तु इस मेले की दिव्यता तब से अधिक बढ़ी जब से उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने राज्य में तथा नरेंद्र मोदी जी ने केंद्र में सत्ता संभाली। अर्ध कुम्भ, जिसे दिव्य कुम्भ 2019 कहा गया, की तैयारी हेतु डबल इंजन की सरकार ने (भारत एवं उत्तर प्रदेश की सरकार) 4300 करोड़ का बजट आवंटित किया जो कि महाकुम्भ 2013 के आवंटित बजट 100 करोड़ से 43 गुना अधिक था। दिव्य कुम्भ के इस विशाल बजट में से 3000 करोड़ से अधिक की धनराशि प्रयागराज शहर एवं उसके आसपास के मूलभूत अधः संरचना के विकास, सुविधाओं के उन्नयन तथा शेष धनराशि पर्यावरण मित्र एवं आधुनिक सुविधाओं से युक्त विश्व प्रसिद्ध अस्थायी 'कुम्भ नगरी' को बसाने, सजाने, सवांरने एवं सुव्यस्थित करने हेतु किया गया। महाकुम्भ 2025 जो गृह एवं नक्षत्रों के अद्भुत संयोग के कारण लगभग 144 वर्षों बाद पड़ रहा है श्रद्धालुओं एवं पर्यटकों के लिए

महत्वपूर्ण आयोजन है। अनुमान है कि इसमें 65 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं का समागम हुआ।

इस भव्य आयोजन पर आने वाले व्यय को लेकर हमेशा की तरह ही तथाकथित रेशनलिस्ट एवं दुराग्रही से अपव्यय साबित करने में लगे हैं। यह लेख, उनके पूर्वाग्रहों, दुराग्रहो को तोड़ने एवं मेले से होने वाले देश एवं समाज को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष आर्थिक लाभ का तथ्यपूर्ण व्योरा प्रस्तुत करने का प्रयास है।

कुम्भ के आर्थिक पक्ष को लेकर एसोचम (Associations of Chamber of Commerce Report –ASSOCHAM) की प्रयागराज 'महाकुम्भ मेला 2013' अध्ययन के आंकड़े जारी किए थे। इन आंकड़ों पर गौर करें तो पता चलता है कि वर्ष 2001 महाकुम्भ में मेला क्षेत्र 3500 एकड़ में था, जो 2013 महाकुंभ में बढ़कर 5000 एकड़ हो गया था तथा दिव्य कुम्भ 2019 की बसावट हेतु लगभग 10000 एकड़ भूमि ली गयी थी जो कि महाकुंभ 2025 में मेल क्षेत्र का विस्तार 20,000 एकड़ से अधिक हो सकता है। जहां, 2013 कुम्भ में लगभग 12 करोड़ श्रद्धालु एवं पर्यटकों ने कुम्भ क्षेत्र में पदार्पण किया, वही उत्तर प्रदेश एवं भारत सरकार के पर्यटन विभाग के अनुमान के अनुसार 'दिव्य कुम्भ 2019' में सम्भाव्य श्रद्धालु एवम पर्यटकों की संख्या 24 करोड़ पार कर गई। उत्तर प्रदेश सरकार के आंकड़ों के अनुसार इस महाकुंभ 2025 में पर्यटकों की संख्या 65 करोड़ को पार कर गई है। न केवल घरेलू पर्यटक की संख्या लगातार बढ़ रही है बल्कि 2013 में जहां विदेशी पर्यटकों की संख्या, लगभग 5 लाख से अधिक थी, 2019 में यह संख्या 10 लाख तक बढ़ गई, वहीं इस कुम्भ में यह संख्या 15 लाख से अधिक होने का अनुमान है।

इस बार उत्तर प्रदेश सरकार की राजस्व एवंम कर से कमाई 25000 करोड़ के पार जा पहुंची है। इतना ही नहीं एसोचम की रिपोर्ट के अनुसार 2019 के अर्धकुंभ के दौरान कुल 1.2 लाख करोड़ से अधिक का कारोबार कुम्भ के दौरान हुआ। ऐसा अनुमान है कि कुम्भ 2025 में कुल कारोबार 3 लाख करोड़ के पार रहा।

भारत सरकार के पर्यटन विभाग की प्रेस रिलीज के अनुसार इस बार भी कुम्भ में शामिल होने के लिए 192 देशों को न्योता भेजा गया। दुनिया भर के महत्वपूर्ण एयरपोर्ट, व्यापारिक स्थलों पर कुम्भ मेला के आमंत्रण वाली बड़ी-बड़ी होर्डिंग्स एवं संस्थाओं तथा समूहों से व्यक्तिगत सम्पर्क किया गया इसके अलावा उत्तर प्रदेश के योगी सरकार ने देश के 6 लाख से अधिक गांवों के जन प्रतिनिधियों, कलाकारों, शिल्पियों एवं सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों को आमन्त्रण भेजा गया। इससे महाकुंभ 2025 में न केवल भव्यता बल्कि वैविध्यता का समावेश रहा। इसके साथ ही लगभग 15 लाख स्थानीय टूर पैकेज के माध्यम से करीब केवल कुम्भ एवं निकट कॉरीडोर से क्षेत्र 15000 करोड़ रुपये की आय हो सकती है, जिसमें केंद्र एवं स्थानीय सरकारों की वीजा एवं अन्य आय सम्मिलित नहीं है।

कुम्भ 2025 में बड़ी मात्रा में बड़े देशी एवं विदेशी कार्पोरेटस की होर्डिंग्स एवं स्टाल के लिए अधिक आवेदन आए है। महाकुम्भ में निजी एवं बहुराष्ट्रीय कंपनियों की उत्कंठा वास्तव में कुम्भ से होने वाली बड़ी आय एवं रोजगार की सम्भावनाओं का द्योतक है। प्रयागराज मेला प्राधिकरण आगन्तुकों को टी-शर्ट, टोपियां, स्वेट-शर्ट, मग, जरीकेन इत्यादि के विपणन का प्लेटफॉर्म प्रदान करती है, जिसका ऑनलाइन विपणन प्लेटफोर्म का अधिकाधिक जनता ने प्रयोग किया। फर्स्ट हैण्ड अनुभव प्राप्त करने, कुम्भ प्रशासन के विविध आयामों रिटेल एवं सप्लाई चेन मैनेजमेंट पर शोध को उत्सुक आज विश्व के प्रतिष्ठित संस्थानों (हार्वर्ड, के लोग, ऑक्सफोर्ड एवं एवं शोध संस्थानों) ने अपनी कई टीमे मेले में भेजी। उच्च आय वर्ग की उत्सुकता को ध्यान में रखते हुए कुम्भ मेला प्रसाशन ने कुम्भ क्षेत्र में ही अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त टेंट भी बनाए, जिनका एक दिन का किराया 10 हजार से लेकर 1.5 लाख तक रहा। इस व्यवस्था से मेला प्रशासन राज्य सरकार के लिए अतिरिक्त संसाधन सृजित करेगा जिसका उत्तर प्रदेश सरकार जन कल्याण कार्यों में उपयोग करेगी।

महाकुम्भ मेला 2025 ऐसे समय पर हुआ जब सोशल मीडिया वृहद आकार ले चुका है। भारत की सांस्कृतिक विरासत के सूक्ष्म से सूक्ष्म गतिविधियों, सनातन संस्कृति निष्ठ जीवन प्रणाली, त्याज्य पूर्ण उपभोग आधारित जीवन प्रणाली, संवहनीय प्रकृति मित्र जीवन प्रणाली (Sustainable and eco-friendly livelihood) का दृश्य एवं श्रव्य कंटेन्ट (Audio Visual Content) का निर्माण किया गया जिससे कंटेन्ट निर्माता, e-platform एवं वितरण कंपनियों को विज्ञापन एवं अन्य माध्यमों से वर्तमान एवं भविष्य की आय की असीम संभावनाएं सृजित हुई।

वास्तव में कुम्भ मेला भारत की धार्मिक, वैविध्य सांस्कृतिक, सामाजिक एवं जीवन प्रणाली के अनावरण एवं विनिमय का संगम मात्र नहीं बल्कि यह देश एवं स्थानीय अर्थव्यवस्था में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान कर रहा है। आज आवश्यकता है इसके विविध आयामों के सकारात्मक पक्षों को उभारने, उनका व्यापक प्रचार-प्रसार करने एवं समष्टिगत एवं व्यष्टिगत पक्षों का सही आर्थिक विश्लेषण कर जनता एवं समाज को जागरूक एवं संवेदनशील बनाने की।

महा कुम्भ 2025 जो गृह एवं नक्षत्रों के अद्भुत संयोग के कारण लगभग 144 वर्षों बाद पड़ रहा है श्रद्धालुओं एवं पर्यटकों के लिए महत्वपूर्ण आयोजन है। अनुमान है कि इसमें 65 करोड़ से अधिक की संख्या का दिव्य एवं भव्य समागम हुआ।

सामाजिक समरसता के अग्रदूत स्वामी दयानंद जी

प्रोफेसर (डॉ.) हरेन्द्र सिंह
सरकार द्वारा 'शिक्षक श्री' विभूषित ख्याति प्राप्त शिक्षाविद, शैक्षिक प्रशासक, प्रोफेसर एवं राष्ट्रवादी चिन्तक

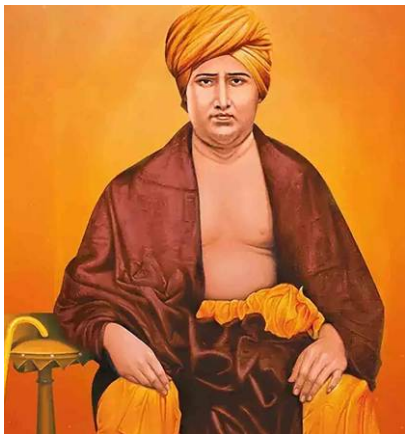

स्वामी दयानंद के व्यक्तित्व और चरित्र की बिना शर्त प्रशंसा की जा सकती है। वह रीढ़ की हड्डी तक शुद्धतावादी थे और अपने पंथ के अनुसार जीते थे। वह एक लड़ाकू, मजबूत, वीर और स्वतंत्र थे।

हमारा भारत केवल एक राष्ट्र ही नहीं है अपितु यह एक देव-स्थली है, पुण्य धरा है, साधु-संतों, ऋषि-महात्माओं की तपोस्थली है, कर्मभूमि है। यह देवभूमि ऐसी पूण्य आत्माओं की जन्मस्थली है जहां पर सामाजिक समरसता के प्रतीक प्रभु श्री राम व कर्मफल का सिद्धान्त देने वाले श्री कृष्ण, शांति का पाठ पढ़ाने वाले भगवान बुद्ध, हिन्दू-मुसलमान की एकता का प्रचार प्रसार करने वाले महात्मा कबीर, रहीम, व रसखान जैसे विद्वानों ने जन्म लेकर अपने व्यक्तित्व व कृतित्व से सामाजिक समरसता का पाठ पढ़ाया है। ऐसी ही पुण्य आत्माओं में स्वामी दयानंद जी का भी नाम आता है जिन्होंने "सत्यार्थ प्रकाश" नामक ग्रंथी की रचना कर न केवल भारत को बल्कि सम्पूर्ण विश्व को आलोकित किया।

सामाजिक समरसता के अग्रदूत स्वामी दयानंद जी भारतीय समाज के महान सुधारकों में से एक थे, जिन्होंने अपने जीवन में समाज के हर पहलू में सुधार के लिए अथक प्रयास किए। वे न केवल एक धार्मिक गुरु थे, बल्कि एक महान समाज सुधारक व लेखक भी थे। स्वामी दयानंद ने अपने जीवन काल में संस्कार विधि, वेदांग प्रकाश, सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, ऋग्वेद भाष्य, यजुर्वेद भाष्य, चतुर्वेद विषयसूची, आर्योद्देश्यरत्नमाला, संस्कृतवाक्यप्रबोधः, व्यवहारभानु, आर्याभिविनय, गोकरुणानिधि, भ्रान्तिनिवारण, अष्टाध्यायी भाष्य, पंच महायज्ञ विधि आदि अनेकों ग्रंथों कि रचना की । उनका जीवन, लेखन और कार्य समाज में जागरूकता और सुधार का एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। उनका आदर्श व दृष्टिकोण समाज में समरसता और समानता की भावना को बढ़ावा देने वाला था।

स्वामी दयानंद सरस्वती का सामाजिक समरसता का दृष्टिकोण भारतीय समाज में व्याप्त जातिवाद, भेदभाव और अंधविश्वास के खिलाफ एक सशक्त विचारधारा थी। उनका मानना था कि समाज में समानता, भाईचारे और एकता को बढ़ावा देने के लिए सबसे पहले जातिवाद, ऊँच-नीच और धर्म के नाम पर होने वाले भेदभाव को समाप्त करना आवश्यक है। स्वामी दयानंद का मानना था कि समाज में जातिवाद, ऊँच-नीच और भेदभाव की कोई जगह नहीं होनी चाहिए। वे सभी जातियों और वर्गों को समान मानते थे और इसके खिलाफ आवाज उठाते थे। उनके द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश एक कालजयी रचना है जिसके माध्यम से उन्होंने सामाजिक समरसता के लिए अपने समय में कई क्रांतिकारी कदम उठाए स्वामी दयानंद ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' में जातिवाद के खिलाफ स्पष्ट रूप से लिखा था कि 'मनुष्य का जन्म उसकी जाति से नहीं, बल्कि उसके कर्मों से होता है।' उन्होंने समाज में जातिवाद को समाप्त करने के लिए यह संदेश दिया कि सभी व्यक्तियों को समान अधिकार प्राप्त होना चाहिए।

स्वामी दयानंद ने ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के बीच भेदभाव को समाप्त करने की कोशिश की। उनका मानना था कि हर व्यक्ति का जन्म उसके कर्मों के अनुसार होता है। स्वामी दयानंद ने भारतीय समाज में प्रचलित जातिवाद और ऊँच-नीच की भावना का विरोध किया और सभी जातियों को समान अधिकार देने की बात की। उन्होंने 'आर्य समाज' की स्थापना की जिसका मतलब था 'उत्कृष्ट समाज।' इसका आदर्श वाक्य था 'कृण्वन्तो विश्वम् आर्यम्', अर्थात् इस दुनिया को सम्माननीय बनाओ। यह समाज के हर वर्ग के लिए खुला था। स्वामी दयानंद ने यह सुनिश्चित किया कि इस समाज में सभी जातियों के लोग शामिल हो सकते हैं, चाहे वे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र हों। आर्य समाज में प्रवेश के लिए जाति या वर्ग का कोई महत्व

नहीं था, केवल व्यक्ति के शुद्ध आचरण और कर्म को महत्व दिया गया। आर्य समाज का उद्देश्य भारतीय समाज को एकजुट करना और उसे धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से सशक्त बनाना था। स्वामी दयानंद ने जातिवाद, छुआछूत और भेदभाव के खिलाफ कई आंदोलनों का नेतृत्व किया। उनके विचारों ने समाज में समरसता की ओर अग्रसर होने के लिए एक मजबूत आधार तैयार किया।

स्वामी दयानंद जी द्वारा दिए गये विचार सामाजिक समरसता पर बहुत ही गहरे और प्रेरणादायक हैं। उनका मानना था कि समाज में समरसता और भाईचारे को बढ़ावा देने के लिए हर व्यक्ति को समान अधिकार और अवसर मिलना चाहिए, बिना किसी भेदभाव के। वे जातिवाद, छुआछूत, और धर्म आधारित भेदभाव के घोर विरोधी थे। उन्होंने यह माना कि समाज में हर व्यक्ति का समान सम्मान होना चाहिए और किसी को भी उसकी जाति, धर्म या समुदाय के आधार पर अपमानित नहीं किया जाना चाहिए। उनका विचार था कि सभी मनुष्य एक ही परमात्मा की संतान हैं और इसलिए सभी को समान अधिकार मिलने चाहिए। वे कहते थे कि, 'सभी मनुष्य समान हैं, इसलिए किसी भी प्रकार का भेदभाव अस्वीकार्य है।' उनका मानना था कि, 'समाज में हर व्यक्ति को समानता, सम्मान और अवसर मिलना चाहिए, ताकि वह अपनी पूरी क्षमता का विकास कर सके।'

स्वामी दयानंद धर्म व सामजिक परम्पराओं को एक विशेष दृष्टिकोण से देखते हुए कहते थे कि, 'धर्म और सामाजिक परंपराएं किसी को नीचा या उपेक्षित करने के लिए नहीं, बल्कि लोगों को एकजुट करने के लिए होनी चाहिए।' स्वामी दयानंद ने 'सत्यार्थ प्रकाश' में लिखा था, 'ईश्वर एक है, उसे किसी रूप या चित्र में नहीं बांटा जा सकता।' उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि जो धर्म लोगों को एकजुट करता है, वही असली धर्म है। वे कहते थे कि वेदों में बताया गया सत्य ही वास्तविक धर्म है, और यही सभी धर्मों का मूल सत्य है। उन्होंने वेदों के माध्यम से समाज को सिखाया कि किसी भी धर्म या विश्वास के नाम पर भेदभाव

सामाजिक समरसता के अग्रदूत स्वामी दयानंद जी भारतीय समाज के महान सुधारकों में से एक थे, जिन्होंने अपने जीवन में समाज के हर पहलू में सुधार के लिए अथक प्रयास किए। वे न केवल एक धार्मिक गुरु थे, बल्कि एक महान समाज सुधारक व लेखक भी थे।

नहीं होना चाहिए। स्वामी दयानंद ने यह भी घोषणा की कि जो व्यक्ति सत्य का पालन करता है, वह किसी भी धर्म या पंथ से हो सकता है, और इसलिए सभी को समान अधिकार होना चाहिए। उनका धर्म में समरसता का दृष्टिकोण इसलिए था कि हर व्यक्ति को अपने धर्म का पालन करते हुए समान सम्मान और अधिकार मिलना चाहिए।

स्वामी दयानंद ने शिक्षा को समाज में समरसता व समानता लाने का एक महत्वपूर्ण उपाय माना और उन्होंने हर किसी को शिक्षा देने का समर्थन किया। इसके अलावा, उन्होंने समाज में व्याप्त अंधविश्वास और अन्य बुराइयों के खिलाफ भी आवाज उठाई थी। स्वामी दयानंद का मानना था कि शिक्षा से ही समाज में समानता, समरसता और जागरूकता आ सकती है। उन्होंने यह सुनिश्चित करने के लिए कई प्रयास किए कि शिक्षा हर वर्ग और हर जाति के लिए उपलब्ध हो। उन्होंने आर्य समाज के माध्यम से कई स्कूलों और गुरुकुलों की स्थापना की। उन्होंने यह माना कि यदि समाज में सुधार लाना है तो सबसे पहले शिक्षा के स्तर को सुधारना होगा, ताकि लोग अपने अधिकारों को समझ सकें और अंधविश्वास को दूर कर सकें।

उनका यह भी दृष्टिकोण था कि यदि महिलाओं और पुरुषों को समान शिक्षा मिलती है, तो समाज में वास्तविक समरसता आएगी। वे इस बात के पक्षधर थे कि हर व्यक्ति को न केवल धार्मिक, बल्कि सामान्य ज्ञान और वैज्ञानिक शिक्षा भी मिलनी चाहिए। स्वामी दयानंद ने महिलाओं के अधिकारों की वकालत की और समाज में उनकी स्थिति में सुधार की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने महिलाओं को शिक्षा देने की आवश्यकता को महसूस किया और उनके जीवन में बदलाव लाने के लिए कदम उठाए। स्वामी दयानंद जी कहते थे कि, 'महिला को वही सम्मान मिलना चाहिए जो पुरुष को मिलता है।' उन्होंने महिलाओं के लिए शिक्षा का समर्थन किया और यह माना कि समाज की प्रगति के लिए महिलाओं को भी समान अवसर और अधिकार मिलना चाहिए। उन्होंने कई बार यह कहा कि महिलाओं को समाज में केवल घर की सीमा तक ही नहीं बांधना चाहिए, बल्कि उन्हें बाहर की दुनिया में भी अपनी पहचान बनाने का अधिकार होना चाहिए। उनके अनुसार, महिलाएं भी समाज में समान रूप से योगदान देने के योग्य हैं। स्वामी दयानंद ने बाल विवाह और सती प्रथा के खिलाफ संघर्ष किया। उन्होंने महिलाओं को स्वतंत्रता, सम्मान और शिक्षा देने की आवश्यकता को महसूस किया और उनका यह प्रयास समाज में समरसता की दिशा में एक महत्वपूर्ण व आवश्यक कदम है।

स्वामी दयानंद जी का जीवन और उनके विचार समाज में व्याप्त भेदभाव, जातिवाद, और धार्मिक अंधविश्वास को समाप्त कर समरसता के लिए समर्पित था। उनका सामाजिक समरसता का दृष्टिकोण भारतीय समाज के सुधार के लिए एक प्रेरणास्त्रोत है जोकि भारतीय समाज को सुधारने और उसे एकजुट करने के लिए था। उन्होंने जातिवाद, भेदभाव, धार्मिक अंधविश्वास और महिलाओं के अधिकारों पर ध्यान केंद्रित करते हुए समाज में समानता और एकता की भावना को बढ़ावा दिया। उनके विचार और उनके कार्य समाज में आज भी प्रासंगिक हैं। हमारी भारत-भूमि धन्य है, जिस पर सामाजिक समरसता के अग्रदूत स्वामी दयानंद जी जैसी अद्भुत विभूतियों ने जन्म लिया है।

स्वामी दयानंद का घर वापसी अभियान

आर्य सागर
प्रवक्ता, आर्य समाज

आर्य समाज का वर्तमान में 150 वां स्थापना वर्ष चल रहा है। आर्य समाज के डेढ़ सौ वे जयंती वर्ष पर हम सभी ऋषि संस्कृति सनातन हिंदू धर्म के उपासकों को यह दिव्य संकल्प लेना चाहिए कि घर वापसी के इस अभियान में कभी भी शिथिलता व्यक्तिगत व संगठन स्तर पर नहीं आनी चाहिए।

आर्य समाज के संस्थापक, आद्य आचार्य स्वामी दयानंद सरस्वती स्वराज, स्वसंस्कृति, स्वदेशी, स्वधर्म, स्वभाषा के उपासक व प्रचारक थे। उनके प्रखर राष्ट्रवादी विचारों से भारतीय स्वाधीनता संग्राम को नई ऊर्जा व प्रेरणा मिली। सामाजिक धार्मिक सुधारक होने के नाते उन्होंने सुधार के व्यापक विविध कार्यों को हाथ में लिया चाहे दलित उद्धार हो या स्त्री शिक्षा हो, गौ रक्षा हो, हिंदी भाषा हो या गुरुकुल शिक्षा पद्धति दयानंद के चिंतन दर्शन कार्यक्षेत्र में यह सभी महत्वपूर्ण रहे लेकिन एक और महत्वपूर्ण कार्य उन्होंने अपने हाथ में लिया वह था मुगलकाल व पश्चात में अंग्रेजी शासन जो ईसाई मत का पोषक था। तलवार के बल, छद्म सेवा अन्य प्रलोभन से हिन्दू से मुसलमान व ईसाई बने व्यक्तियों की एकल व सामुहिक स्तर पर हिन्दू धर्म में घर वापसी अर्थात शुद्धि।

महर्षि दयानंद ने अपने सार्वजनिक व्याख्यानों में यह घोषणा की आर्य धर्म अर्थात् हिंदू धर्म प्रचारक धर्म है। हमारे पूर्वजों ने देश- देशांतर, दीप-दीपांतर में जाकर वैदिक सभ्यता संस्कृति का प्रचार किया। उपदेश के माध्यम से लोगों को वैदिक धर्म में दीक्षित किया लेकिन अहो! दुर्गभाग्य आज हमारा आज आचार्य भूमि भारत में ऋषियों, राम-कृष्ण की संतानों को धर्म भ्रष्ट किया जा रहा है। महर्षि दयानंद की मान्यता थी कि हिंदू धर्म की पाचन शक्ति विभिन्न मतों को अपने में मिलाने आत्मसात करने में सभ्यता के आदिकाल से बड़ी प्रबल रही है। शक, हूण, आभीर जैसी विदेशी जातियों को इसने अपने अंदर आत्मसात कर उन्हें हिंदू धर्म में दीक्षित कर दिया लेकिन मध्यकाल में जो वैचारिक जड़ता हिंदू धर्म में आई उसके कारण विशाल भारत रूपी विशाल हिंदू परिवार में नए सदस्यों का आगमन तो दूर हिंदुओं की संतति ही ईसाई मुसलमान तेजी से बन रही है।

दूरदर्शी महर्षि दयानंद ने इस सब का कारण मुस्लिम शासन से आयी विकृति अस्पृश्यता, अशिक्षा व लंबे पराधीनता के काल के कारण हिंदुओं में आई आत्महीनता आत्म गौरव व अपनी संस्कृति के प्रति उपेक्षा का भाव व समुद्री यात्रा करने से धर्म भ्रष्ट होने जैसी अतार्किक रुढ़ी को माना।

महर्षि दयानंद ने 19 वीं शताब्दी में अपने आप में अनोखे सर्वाधिक व्यापक घर वापसी अभियान का सूत्रपात कर दिया। इस अभियान में उन्होंने देहरादून के जन्म से मुसलमान मोहम्मद उमर को स्वयं अपने हाथों से शुद्ध किया और उसे नया नाम 'अलखधारी' दिया जिन्होंने कालांतर में वैदिक हिंदू धर्म की बहुत सेवा की अलखधारी जी ने सैकड़ों अपने जैसे जन्म से मुसलमानों की हिंदू धर्म में घर वापसी कराई।

काशी की विद्वत पौराणिक मंडली ने भी महर्षि दयानंद के इस कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की। बिहार भागलपुर में एक दिन 30-40 यूरोपियन व हिंदुस्तानी पादरी स्वामी दयानंद से मिलने आये। स्वामी जी धारा प्रवाह संस्कृत में उनसे बोलते रहे और उन्हें यथासंभव समझाते भी रहे स्वामी जी के उपदेश को सुनकर एक ईसाई पादरी जो पहले बंगाली ब्राह्मण था बहुत रोने लगा और उसने स्वामी जी से कहा यदि आप जैसे तार्किक धर्म धुरंधर तेजस्वी देशभक्त पंडित मुझको पहले मिल जाते तो मैं ईसाई न होता स्वामी जी ने कहा आप चिंतित क्यों होते हैं मैं आज तो आपको मिल गया। वह इसाई बना बंगाली ब्राह्मण उसी दिन हिंदू बन गया। स्वामी जी ने उसे अपने हाथों से यज्ञोपवीत पहनाया व गायत्री की दीक्षा दी।

अमृतसर के मिशन स्कूल के पंडित खड़क सिंह जो 12 वर्ष पहले ईसाई हो गए थे। अमृतसर में स्वामी जी का वेदों पर व्याख्यान सुनकर व उनके बुद्धिवाद पूर्व तर्कों से प्रभावित होकर तत्काल घर वापसी करते हुए हिंदू बन गए और अपनी दो बेटियों का विवाह उन्होंने हिंदुओं में किया और आजीवन आर्य समाज के उपदेश के रूप में पंजाब में दलित उद्धार के क्षेत्र में बहुत उत्तम कार्य किया।

एक बार प्रयागराज में स्वामी दयानंद ठहरे हुए थे। वहां अनेकों व्यक्तियों हिंदू धर्म छोड़कर ईसाई मत अपनाने को उद्यत हो गए जब स्वामी दयानंद को यह पता चला तो स्वामी जी उनको उपदेश दिया। उपदेश को सुनकर ईसाई बनने को तैयार उन युवकों का सारा उत्साह ठंडा पड़ गया और हिंदू धर्म में उनकी आस्था निष्ठा बलवती हो गई।

स्वामी दयानंद के घर वापसी अभियान को लेकर ऐसी एक नहीं असंख्य घटनाएं हैं। यहां इस लेख के विस्तार भय से उन सभी को उद्धृत नहीं किया जा रहा।

देव दुर्भाग्य से 59 वर्ष की आयु में ही तत्कालीन राजनीतिक षडयंत्रों के कारण जिसमें महर्षि दयानंद के घर वापसी अभियान की विरोधी व उससे घबराई हुई शक्तियां भी शामिल थी। उनके द्वारा जोधपुर प्रवास के दौरान दुग्ध में जहर दिए जाने के कारण महर्षि दयानंद का अक्टूबर 1883 में अजमेर में बलिदान हो गया।

लेकिन अपने देहांत के समय महर्षि दयानंद अपनी वसीयत लिख कर छोड़ गये थे यूं तो वह वसीयत तीन बिंदुओं पर लिखी गई जिसमें दीप दीपांतर देश देशांतर में वैदिक हिंदू धर्म का प्रचार व भारतवर्ष के अनाथ दीन हीनों का पालन पोषण उनकी सुशिक्षा का प्रबंध उनकी उत्तराधिकरणी परोपकारिणी सभा अजमेर करेगी। वसीयत के इन्हीं बिंदुओं में स्वामी दयानंद के घर वापसी अभियान का भी मूल एजेंडा भी निहित था ।अपने आचार्य की आज्ञा को शिरोधार्य मानकर महर्षि दयानंद के शिष्य जिनमें पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराज, पंडित लेखराम, स्वामी श्रद्धानंद आदि ने घर वापसी अभियान अर्थात् शुद्धि के कार्य को अपने हाथों में ले लिया। आर्यवीर पंडित लेखराम ने मुल्तान पेशावर लाहौर सहित समूचे पंजाब में महर्षि दयानंद के शुद्धि कार्य को आगे बढ़ाया। पंडित लेखराम के शुद्धि के कार्य से घबराकर एक मत में अंधे मुसलमान ने छुरा मारकर उनकी

महर्षि दयानंद ने अपने सार्वजनिक व्याख्यानों में यह घोषणा की आर्य धर्म अर्थात हिंदू धर्म प्रचारक धर्म है। हमारे पूर्वजों ने देश-देशांतर, दीप -दीपांतर में जाकर वैदिक सभ्यता संस्कृति का प्रचार किया।

हत्या कर दी लेकिन महर्षि दयानंद के शिष्य कहां पीछे हटने वाले थे। पंडित लेखराम के पश्चात इस कार्य को स्वामी श्रद्धानंद ने अपने हाथों में लिया और इस घर वापसी अभियान को संगठित कर उत्तर, पश्चिम व मध्य भारत के घर-घर तक पहुंचा दिया। स्वामी श्रद्धानंद के नेतृत्व में 13 फरवरी 1923 को भारत के विभिन्न प्रांतों के 85 आर्य समाज के सुधारक प्रतिनिधि आगरा में एकत्रित हुए। वहां शुद्धि कार्य के लिए एक केंद्रीय सभा स्थापित की जाए। इस आशय से 'भारतीय हिंदू शुद्धि सभा' की स्थापना की गई और फिर तो इस सभा ने जो कार्य किया वह एक इतिहास बन गया। इस सभा ने तत्काल आगरा के पास राजपूत से मुसलमान बने जिन्हें मलकाना राजपूत कहा जाता था। ऐसे 20000 हजार से अधिक मलकाना राजपूत की शुद्धि की।

अपनी स्थापना 1923 से लेकर 1931 के मध्य 8 वर्षों में सभा द्वारा 2 लाख से अधिक मुसलमानों जिसमें राजपूत गुर्जर जाट त्यागी आदि शामिल थे उनकी घर वापसी कराई। मुस्लिम मौलवी इन सभी जातियों को नौ- मुसलमान कहते थे जो मुसलमान हो गई थी। इसी दौरान इस सभा ने 7000 से अधिक दलितों को ईसाई व मुसलमान होने से बचाया 127 शुद्धि सम्मेलन इस सभा ने इस दौरान किये जिसकी 156 पंचायत व 81 बड़े-बड़े सामाजिक समरसता सहभोज आयोजित किए गए। सभा ने अपना 'शुद्धि समाचार' मासिक पत्र निकाला जिसके उसे समय में 14000 ग्राहक थे। यह पत्र आज भी निकलता है। उल्लेखनीय होगा लेखक के परनाना स्वर्गीय महाशय दीवान चंदीला भी शुद्धि सभा के कार्यकर्ता नेता थे। जिन्होंने हरियाणा में शुद्धि आंदोलन में भाग लिया फरीदाबाद जनपद के हिंदू गुर्जर से मुसलमान बने जिन्हें मूला गुर्जर कहा जाता था, उनकी हजारों की संख्या में घर वापसी कराई समूचे पांच गांवों को शुद्ध किया। अखिल भारतीय शुद्धि सभा आज भी घर वापसी के कार्य को कर रही है।

आर्य समाज का वर्तमान में 150 वां स्थापना वर्ष चल रहा है ।आर्य समाज के डेढ़ सौ वे जयंती वर्ष पर हम सभी ऋषि संस्कृति सनातन हिंदू धर्म के उपासकों को यह दिव्य संकल्प लेना चाहिए कि घर वापसी के इस अभियान में कभी भी शिथिलता व्यक्तिगत व संगठन स्तर पर नहीं आनी चाहिए अपने पूर्वजों से प्रेरणा लेकर यदि हम तन मन धन से इस अभियान को पुनः नवीन ऊर्जा व दिशा देते हैं तो हम महर्षि दयानंद व इस क्षेत्र में कार्य करने वाले अन्य धर्म व संस्कृति के सेवकों को यह हमारी ओर से सच्चे अर्थों में श्रद्धांजलि होगी।

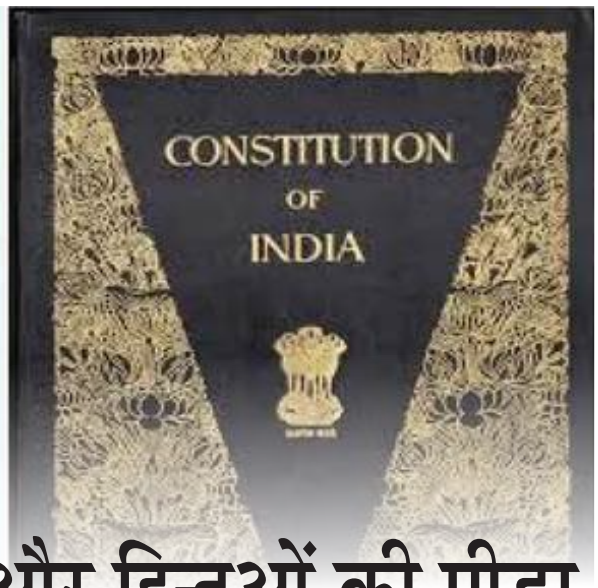

संविधान की तीन धाराएं और हिन्दुओं की पीड़ा

नरेन्द्र भदौरिया
वरिष्ठ पत्रकार

यह कहना निरी मूढ़ता का परिचायक था कि यदि हिन्दुओं की सन्तानों को उनके धर्म ग्रन्थों की पढ़ाई सुनियोजित ढंग से कराने की अनुमति दी जाएगी तो देश का सामाजिक वातावरण बिगड़ जाएगा।

भारत के संविधान में तीन अति विवादास्पद अनुच्छेद 28, 29 और 30 जवाहर लाल नेहरू और बापू अर्थात मोहन दास करम चन्द्र गाँधी के हठ पर सम्मिलित किये गये थे। बाद में कांग्रेस नेतृत्व की सरकारों ने इनको और जटिल बनाकर सनातन संस्कृति के सर्वथा विरोध की शिक्षा प्रणाली विकसित करने का मार्ग प्रशस्त किया। यह प्रावधान अभी तक संविधान का अंग हैं। इन अनुच्छेदों की धाराएं कहती है कि भारत के मुसलिम और ईसाई समाज के संगठन अपने मजहब और रिलीजन की पुस्तकों कुरान और बाइबिल की पढ़ाई अपने मदरसे, स्कूल कालेज खोलकर कर सकते हैं। जबकि कोई भी हिन्दु स्कूल कालेज सनातन संस्कृति की शिक्षा के लिए न तो निजी स्तर पर खोला जा सकता है और ना ही किसी शासकीय स्कूल में हिन्दू संस्कृति से जुड़ी पढ़ाई की व्यवस्था की जा सकती है।

हिन्दू धर्म ग्रन्थों की शिक्षा पर रोक : इन अनुच्छेदों 28, 29 और 30 की विभिन्न धाराओं में सनातन धर्म अर्थात हिन्दू धर्म की पुस्तकों गीता, रामायण सहित किसी भी पुस्तक की पढ़ाई पर कठोर प्रतिबन्ध का प्रावधान किया गया है। यह भी कहा गया है कि यदि किसी स्कूल अथवा कालेज द्वारा इस प्रावधान का उल्लंघन हिन्दू समाज के पक्ष में किया गया तो उसे प्रशासन बन्द करा सकेगा। साथ ही ऐसे स्कूल के विरुद्ध कठोर दण्डात्मक कार्रवाई की जा सकेगी। मुसलमानों और ईसाईयों को विशेषाधिकार देने के लिए संविधान सभा में तर्क दिये गये की इन मजहबी और रिलीजियश वर्गों का प्रचार-प्रसार भारत में पर्याप्त नहीं है। संविधान में अन्य प्रावधान भी किये गये जो इनके प्रति पक्षपात दर्शाते हैं। इन्हीं वर्गों को अधिकार दिया गया कि वह भारत के हिन्दू समाज के विभिन्न वर्गों का मनान्तरण करा सकेंगे। जिससे इनका जनसंख्या बल बढ़ सके।

शिक्षा सम्बन्धी तीनों अनुच्छेदों की धाराओं में ऐसी व्यवस्था की गयी है कि भाषाई और धार्मिक दृष्टि से अल्पसंख्यक वर्गों को भारत के बहुसंख्यक हिन्दुओं के समक्ष सबल बनाया जाय। यही मन्तव्य इनके पीछे की अघोषित शक्ति है। संविधान में जब यह विवादित अनुच्छेद जोड़े जा रहे थे तब सरदार बल्लभ भाई पटेल ने इसका प्रबल विरोध किया था। पटेल जी की बात का समर्थन बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर ने भी किया था। उन्होंने माना था कि एक ओर इस्लाम और क्रिश्चियन समाज के बच्चों को उनके धर्म की शिक्षा और प्रचार-प्रसार का अवसर देना और दूसरी ओर सनातन संस्कृति के विभिन्न वर्गों के मौलिक शिक्षा और धर्म से जुड़े ग्रन्थों की शिक्षा पर कठोर प्रतिबन्ध लगाना पक्षपात एवं अन्याय है।

सरदार पटेल के तर्कों के विरोध में नेहरू अड़ गये : सरदार पटेल के तर्क संगत अभिमत पर जवाहर लाल अड़ गये। बहुत समझाने पर भी नेहरू अडिग रहे। बापू मोहन दास करम चन्द्र गाँधी संविधान सभा के सदस्य नहीं थे। उन्होंने अपने आपको इस सभा से स्वमेव मुक्त रखा था। पर मुसलमानों और ईसाई समाज के हितों के लिए अनेक प्रावधान उनके हठ करने पर ही संविधान का अंश बनाये गये थे। कई बार पूरी संविधान सभा को उनके सुझावों को आदेश मानकर संविधान में जोड़ना पड़ा था। एक बार तो गाँधी बिड़ला हाउस में भूमि पर चटाई डालकर अनशन करने बैठ गये थे। इस तरह अपनी बात मनवाकर ही अनशन तोड़ा था। ऐसे हठी गाँधी ने नेहरू के विरुद्ध सरदार पटेल की बात पर तनिक विचार करने से भी मना कर दिया था।

हिन्दुओं की धार्मिक शिक्षा को बापू ने नकारा : सरदार पटेल अपने मन की व्यथा लेकर जब बापू के पास गये तो उन्होंने भी हिन्दुओं के धार्मिक शिक्षा के अधिकार को नकार दिया। गाँधी प्रकट रूप से यह तो दर्शाते थे कि वह श्रीराम के जीवन को आदर्श मानते हैं। श्रीमद भगवतगीता में श्रीकृष्ण के उपदेशों को अनमोल मानने की बातें कहते थे। पर यह विडम्बना थी कि जब कभी जवाहर लाल नेहरू किसी बात पर अड़ जाते तो गाँधी के हाथ की लाठी गिर पड़ती थी। गाँधी ने कभी नेहरू को निराश नहीं किया। भले सारे जग में अपनी हंसाई करा ली। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस को कांग्रेस अध्यक्ष की कुर्सी से उतारने के लिए गाँधी जी की हठवादिता जगजाहिर है।

बाबू राजेन्द्र प्रसाद का अभिमत : यह कहना निरी मूढ़ता का परिचायक था कि यदि हिन्दुओं की सन्तानों को उनके धर्म ग्रन्थों की पढ़ाई सुनियोजित ढंग से कराने की अनुमति दी जाएगी तो देश का सामाजिक वातावरण बिगड़ जाएगा। वास्तव में नेहरू की दृष्टि में सनातन संस्कृति के सभी धार्मिक ग्रन्थ कल्पित हैं। इनकी बातें नये समाज के अनुकूल नहीं हैं। सरदार पटेल और बाबा साहब ने जब संविधान सभा के अध्यक्ष डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद से हस्तक्षेप करने के लिए अनुनय दिया तो कहा जाता है कि उन्होंने यह कहकर सभी को मौन करा दिया था कि बात बहुत संवेदनशील हो जाएगी। इस मोड़ पर नेहरू का रुख देखते हुए बापू उन्हीं की सुनना चाहेंगे। तब सारे देश में यह बात एक तरह के आक्रोश का कारण बन सकती है। ऐसा उन परिस्थितियों को और बिगाड़ने से अतिरिक्त कोई परिणाम नहीं देता। अन्ततः पटेल जी भी विवश होकर मौन साध गये।

अन्याय का विरोध करने हिन्दू समाज नहीं जागा : सरदार पटेल और बाबा साहब निराश तो हुए थे पर उनका मानना था कि आगे चलकर एक न एक दिन ऐसा नेतृत्व उभरेगा जो इस अन्याय पूर्ण प्रावधान का अन्त कर देगा। कितने दुर्भाग्य की बात है कि सनातन संस्कृति के संवाहक हिन्दू समाज में अब तक वैसी संवेदना नहीं जगी कि संविधान के अनुच्छेद 28, 29 और 30 के अन्याय पूर्ण प्रावधानों को मिटाया जा सके। सहिष्णुता को बोझ की तरह भारत में सिर पर उठाये चल रहा हिन्दू समाज यह बात जाने कब समझेगा कि भारत को मजहब और रिलीजन के नाम पर और दो टुकड़ों में बाँटने का षडयन्त्र नेहरू ने गाँधी बाबा की लाठी का साथ पाकर कर दिया था। जबकि दूसरी ओर भारत के प्रति सदा प्राण प्रण से समर्पित सनातन सांस्कृतिक धारा से जुड़ा हिन्दू समाज अपनी प्रतिबद्धता से कभी पीछे नहीं हटा।

समरस वातावरण पर तीनों अनुच्छेदों का दुष्प्रभाव : समय तीव्रता से बढ़ता रहा और इन तीन अनुच्छेदों के अति गम्भीर अति हानिकारक प्रावधानों के विषाणु भारत के समरस वातावरण को बिगाड़ते जा रहे हैं। मजहबी और रिलीजियश हठवादी भारत पर एकाधिकार की बातें उन्मादी बनकर कहने से कभी नहीं चूकते। भारत की एकात्मता की शक्ति को छिन्न-भिन्न करने के लिए देश में ऐसे नेता खड़े दिखायी दे रहे हैं जिन्होंने लज्जा की चादर फाड़ कर फेंक दी है। जिस कांग्रेस के नेता गाँधी ने नेहरू की हर बात को सर्वोपरि रखा उन्हीं का संयुक्त उत्तराधिकार प्राप्त सोनिया का परिवार देश को अपमानित करने में तनिक संकोच नहीं करता। ऐसे में परिस्थिति की मांग है कि भारत का वर्तमान सशक्त नेतृत्व सनातन संस्कृति के प्रति किये गये इस अन्याय का अन्त करे। देश में सनातन संस्कृति के सद ग्रन्थों की शिक्षा की व्यवस्था भी हो सके। हिन्द यह मांग नहीं करता कि मुसलमान और ईसाई अपने ग्रन्थ नहीं पढ़ें। पर यह कैसा न्याय है कि हिन्दुओं को उनके धार्मिक ग्रन्थों को पढ़ने-पढ़ाने पर संवैधानिक रोक लगायी जाय। ऐसा अन्याय, पक्षपात चाहे जिसके हठ और समर्थन से किया गया हो उसे तत्काल प्रभाव से समाप्त करना चाहिए।

संविधान से एक और अन्याय की गूंज : भारतीय संसद में संविधान से सम्बन्धित एक और अन्याय से पर्दा उठाया गया है। भारतीय संविधान की पुस्तक में भारत के प्राचीन धर्मग्रन्थों से सम्बन्धित अनेक चित्रों को समाहित करने की व्यवस्था की गयी थी। इनमें रामायण, गीता, महाभारत से जुड़े अनेक प्रसंग सम्मिलित थे। राज्यसभा में भाजपा के सांसद राधामोहन अग्रवाल ने इस प्रसंग को उठाया। उन्होंने बताया कि बिना संसद की अनुमति लिए संविधान से चुपचाप छेड़छाड़ की गयी। यह पाप पिछली कांग्रेस नीति सरकारों ने किया। विचारणीय विषय है कि जिस संविधान को लेकर कांग्रेस का वर्तमान अधकचरा नेतृत्व अशोभनीय बातें करता है वह ऐसे मूर्त रूप में पाप तुल्य कृत्यों के प्रति मौन साध लेता है। समय हर अन्याय से पर्दा उठाने के लिए हुंकार भरता है। इस हुंकार को अधिक दिनों तक दबाया नहीं जा सकता।

इन अनुच्छेदों 28, 29 और 30 की विभिन्न धाराओं में सनातन धर्म अर्थात हिन्दू धर्म की पुस्तकों गीता, रामायण सहित किसी भी पुस्तक की पढ़ाई पर कठोर प्रतिबन्ध का प्रावधान किया गया है।

जब ब्रह्मतत्व में विलीन हुए श्री गुरुजी

डॉ. प्रताप निर्भय सिंह
शोध प्रमुख, प्रेरणा शोध संस्थान न्यास, नोएडा

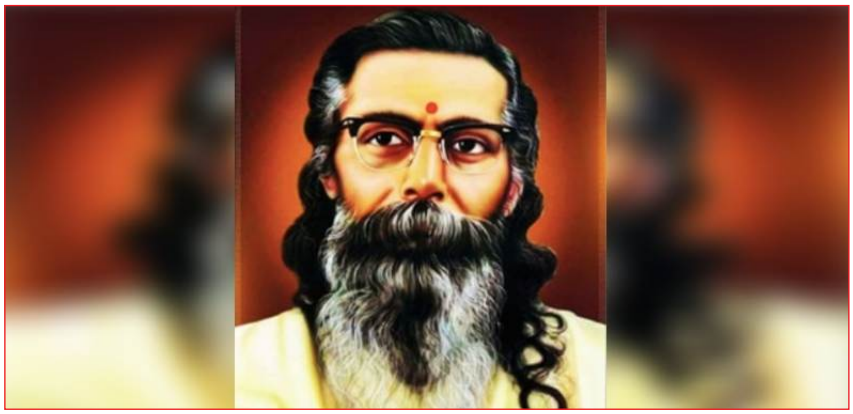

3 दिसम्बर 1971 को भारत-पाक युद्ध की घोषणा हो गयी और 4 दिसम्बर 1971 को नागपुर में श्री गुरुजी ने कहा, "राष्ट्रहित सर्वोपरि है और व्यक्ति, दल आदि का विचार गौण है इसलिए आज जब अपना राष्ट्र युद्ध स्थिति में घसीटा गया है, प्रत्येक स्वयंसेवक और संघ प्रेमी व्यक्ति द्वारा व्यक्ति के नाते तथा संघ के नाते देश की रक्षा के सभी कार्यों में सरकार को मन:पूर्वक सहायता किया जाना स्वाभाविक ही है।"

भारत मृत्युंजय भारत है। कालचक्र के आघातों से टकराकर फिर से उठ खड़ा होता है। अमृत का पुत्र है भारत! प्रत्येक संकट के बाद यह बात और अधिक पुष्ट हो जाती है। 1962 और 1965 में चीन और पाकिस्तान द्वारा थोपे गये युद्धों की विभीषिका से आगे निकलकर पुनर्नवा भारत फिर से आगे की यात्रा पर अग्रसर हो चुका था और संघ भी राष्ट्र के परम वैभव प्राप्ति के लक्ष्य हित समर्पण भाव से आगे बढ़ रहा था। वर्ष 1963 में श्री गुरुजी नेपाल के प्रवास पर गये थे तो उन्होंने नेपाल नरेश महाराजा महेंद्र शाह से भारत-नेपाल संबंधों एवं हिन्दू हितों के सम्बन्ध में विस्तार से चर्चा की थी। नेपाल प्रवास के दौरान उन्होंने नेपाल नरेश को भारत में संघ के उत्सव में आने का निमंत्रण भी दिया जिसे नेपाल नरेश ने सहर्ष स्वीकार किया। 14 जनवरी 1965 को संघ के मकर संक्रांति कार्यक्रम में नेपाल नरेश आमंत्रित थे किन्तु दुर्भाग्य से भारत सरकार ने किन्हीं कारणों से उन्हें भारत आने को मना कर दिया। इससे नेपाल नरेश बहुत आहत हुए थे और उन्होंने पत्र में श्री गुरुजी को हिन्दू समारोह में एक हिन्दू के नाते भाग लेने से वंचित किये जाने को लेकर अपना क्षोभ व्यक्त किया था।

1966 में बिहार राज्य में भयंकर सूखा पड़ा जिसमें हजारों स्वयंसेवक सेवा भाव से सूखे से प्रभावित अपने बंधु-बांधवों के लिए राहत कार्य में जुटे। उस समय स्वयंसेवकों का निस्वार्थ सेवा भाव देखकर लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने मुक्त कंठ से स्वयंसेवकों की प्रशंसा की। इसी वर्ष प्रयागराज कुम्भ में प्रथम हिन्दू सम्मेलन आयोजित किया गया, श्री गुरुजी और अनेक संतों धर्माचर्यों ने इस आयोजन को सफल बनाया। इस अवसर पर चारों शंकराचार्य एक ही मंच पर उपस्थित थे। इस सम्मेलन में 11 प्रस्ताव पारित किए गए जिनमें विशेष रूप से घर वापसी, मंदिरों का वैभव, गौ रक्षा, संस्कृत भाषा और विदेशों में रह रहे हिंदुओं की सुरक्षा जैसे विषयों पर पारित प्रस्ताव प्रमुख थे।

1967 में महाराष्ट्र प्रांत में संघ का प्रांतिक शिविर लगा जिसमें 10000 स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। 1967 में केरल में कम्युनिस्ट नेतृत्व वाले संयुक्त मोर्चा मंत्रिमंडल के आने पर मुस्लिम लीग ने अलग मुस्लिम बहुल जिले की मांग की। ऐसे में कम्युनिस्ट नेताओं और मुस्लिम लीग के राष्ट्रविरोधी गठबंधन में निहित खतरे को भांपते हुए स्वतंत्रता सेनानी के. केलप्पन के नेतृत्व में सत्याग्रह आंदोलन चला जिसमें भारतीय जनसंघ और संघ के स्वयंसेवकों की विशेष भूमिका रही। 1968 में मध्य प्रदेश के शाजापुर में भी प्रांतिक शिविर का आयोजन किया गया।

इस दौरान संघकार्य विस्तार हित कठोर दैनिकचर्या और निरंतर प्रवास के चलते श्री गुरुजी का शरीर कमजोर हो रहा था किन्तु

उनकी दृढ़ इच्छा शक्ति के सामने उनका शारीरिक कष्ट पराजित हो जाता था। पूर्व में 1960 के समय से ही चिकित्सकों ने उनके शरीर की जांच कर उनके शरीर में गंभीर रोग होने की आशंका जताई थी किंतु श्री गुरुजी संघकार्य को विस्तार देने में समर्पित थे, धीरे-धीरे उनका रोग बढ़ता गया और 1970 में उन्हें कैंसर होने की पुष्टि हुई। उनके रोग की स्थिति लगातार बिगड़ रही थी और वह निरंतर कार्य कर रहे थे।

1971 में विदर्भ में प्रांतिक शिविर का आयोजन हुआ जिसमें 10,000 से अधिक स्वयंसेवकों की उपस्थिति रही। दूसरी ओर देश विभाजन के बाद से ही पूर्वी पाकिस्तान में हिन्दुओं की स्थिति दोयम दर्जे की थी। यहां तक कि पाकिस्तानी सरकार बंगाली मुसलमानों पर भी अत्याचार कर रही थी। लाखों बांग्लादेशियों ने भारत में शरण ले ली थी। एक लाख से अधिक बांग्लादेशी नागरिकों ने मुक्तिवाहिनी का गठन कर पाकिस्तानी सेना से लोहा ले रखा था। श्री गुरुजी के निर्देश पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी मंडल ने 11 जुलाई 1971 को 'बांग्लादेश (पूर्वी पकिस्तान) में पाकिस्तान का पिशाच नृत्य' नामक प्रस्ताव पारित किया था जिसमें कहा गया था कि,"बांग्लादेश (पूर्वी पकिस्तान) से हिन्दुओं के समूल विच्छेद का कार्य पाकिस्तान ने प्रारंभ कर दिया है इसके परिणाम स्वरुप 70 लाख हिन्दू भारत आ चुके हैं और शीघ्र ही और हिन्दुओं के भी आने की संभावना है।" 17 अक्टूबर 1971 को 'बांग्लादेश के प्रति भारत का कर्तव्य' नाम से दूसरा प्रस्ताव पारित किया गया, जिसमें स्पष्ट उल्लेख था कि, "यदि पाकिस्तान भारत पर आक्रमण करने का दुस्साहस करता है तो सरकार को उसे दृढ़ता से सबक सिखाना होगा।" इन्ही परिस्थितियों में 3 दिसम्बर 1971 को भारत-पाक युद्ध की घोषणा हो गयी और 4 दिसम्बर 1971 को नागपुर में श्री गुरुजी ने कहा, "राष्ट्रहित सर्वोपरि है और व्यक्ति, दल आदि का विचार गौण है इसलिए आज जब अपना राष्ट्र युद्ध स्थिति में घसीटा गया है, प्रत्येक स्वयंसेवक और संघ प्रेमी व्यक्ति द्वारा व्यक्ति के नाते तथा संघ के नाते देश की रक्षा के सभी कार्यों में सरकार को मनरूपूर्वक सहायता किया जाना स्वाभाविक ही है।" 7 और 16 दिसम्बर को भी इन विषयों को लेकर उन्होंने प्रेरक उद्बोधन दिए। इस युद्ध में भारत की गौरवपूर्ण विजय हुई। जीत से प्रफुल्लित श्री गुरुजी ने तत्कालीन रक्षा मंत्री जगजीवन राम को पत्र लिखकर बधाई दी और जीत के लिए देश की तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी की प्रशंसा भी की। 1 जनवरी 1972 को कोलकाता में एक जनसभा में श्री गुरुजी ने इस युद्ध में बलिदान हुए सैनिकों को श्रद्धांजलि अर्पित की।

पूर्व में 1963 में अखिल भारतीय स्वामी विवेकानन्द शताब्दी समारोह समिति और विवेकानन्द शिला स्मारक समिति पंजीकृत हो चुकी थी, जिसके तत्वावधान में संघ प्रचारक एकनाथ रानाडे के कुशल निर्देशन में स्मारक का कार्य गतिशील था। इस पुनीत कार्य हेतु हजारों स्वयंसेवकों ने देशभर से 1-1 रुपये की सहयोग राशि एकत्र की। 02 सितम्बर 1970 को विवेकानन्द शिला स्मारक की प्राण प्रतिष्ठा हेतु राष्ट्रपति वी.वी. गिरि द्वारा उद्घाटन सम्पन्न हुआ।

इस समय तक श्री गुरुजी का स्वास्थ्य बहुत अधिक गिर चुका था। 4 फरवरी 1973 को बेंगलुरु में उन्होंने सार्वजनिक रूप से स्वयंसेवकों को संबोधित किया तथा 'विजय ही विजय' कहकर अपनी बात समाप्त की, यही वाक्य सार्वजनिक रूप से स्वयंसेवकों के लिए उनका अंतिम वाक्य बन गया। 5 जून 1973 को श्री गुरुजी ने अपनी नश्वर देह त्याग दी।

4 फरवरी 1973 को बेंगलुरु में श्री गुरुजी ने सार्वजनिक रूप से स्वयंसेवकों को संबोधित किया तथा 'विजय ही विजय' कहकर अपनी बात समाप्त की, यही वाक्य सार्वजनिक रूप से स्वयंसेवकों के लिए कहा गया उनका अंतिम वाक्य बन गया।

6 जून को उनकी अंत्येष्टि से पूर्व श्री गुरुजी द्वारा अखिल भारतीय व्यवस्था प्रमुख पांडुरंग पंत क्षीरसागर को दिए गये तीन पत्रों को खोला गया, पहले पत्र में बाला साहब देवरस को संघ के तृतीय सरसंघचालक का दायित्व दिए जाने का उल्लेख था। दूसरे पत्र में श्री गुरुजी ने कहा था कि संघ के संस्थापक पूज्य डॉ. हेडगेवार जी के अतिरिक्त किसी और का स्मारक न बनाया जाए। तीसरे पत्र में उन्होंने लिखा था, "मुझसे जाने-अनजाने में यदि किसी के हृदय को ठेस पहुंची हो तो मैं सबसे करबद्ध क्षमा याचना करता हूं।" श्री गुरुजी का विदा होना संघ के लिए एक बड़ा आघात था।

1974 में छत्रपति शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक की त्रिशताब्दी मनाई गई। राजनीतिक हठवादिता और अहम के चलते 25 जून 1975 को तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने भारत की जनता पर 'आपातकाल' थोप दिया। इंदिरा गांधी ने तानाशाही रवैय्या अपनाते हुए अपने इस अनैतिक कृत्य में संघ को अपने रास्ते का रोड़ा मानते हुए 4 जुलाई को संघ पर प्रतिबंध लगा दिया। संघ पर लगाया गया यह दूसरा प्रतिबंध था। इस प्रतिकूल समय में भी आपातकाल के विरुद्ध आंदोलन में संघ के स्वयंसेवकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। हजारों स्वयंसेवकों ने सत्याग्रह किया और जेल गए। अनेक वरिष्ठ स्वयंसेवकों सहित सरसंघचालक बाला साहब देवरस को गिरफ्तार कर लिया गया। इस परीक्षाकाल में स्वयंसेवकों ने इस जन आन्दोलन को कुचलने की कांग्रेस की मंशा को कैसे धूल-धूसरित किया इसकी चर्चा करेंगे इस श्रृंखला के अगले भाग संघ यात्रा - 6 में...

झूठ की बुनियाद पर खड़ा भवन धराशाई

डॉ. अनिल कुमार निगम
वरिष्ठ पत्रकार

हरियाणा और महाराष्ट्र के चुनावों के बाद आत्मविश्वास से लवालव भारतीय जनता पार्टी ने 27 वर्ष का सूखा खत्म करते हुए दिल्ली विधानसभा पर कब्जा कर लिया है। यह भाजपा की साधारण जीत नहीं है बल्कि यह आम आदमी पार्टी और उसके संयोजक अरविंद केजरीवाल की असाधारण हार है। दिल्ली विधानसभा के परिणाम ने यह संदेश दे दिया है कि झूठ और फरेब की बुनियाद पर खड़ा किया गया महल का एक न एक दिन भरभरा कर गिरना तय है।

उल्लेखनीय है कि 27 वर्ष पूर्व भाजपा नेता सुषमा स्वराज 52 दिन के लिए दिल्ली की मुख्यमंत्री रही थीं। वास्तविकता तो यह है इस बार की जीत इसलिए और खास है क्योंकि भाजपा ऐसा प्रदर्शन मोदी लहर में भी नहीं कर पाई थी। लेकिन इस बार भाजपा की सशक्त चुनावी रणनीति और पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और उनकी टीम का असली चेहरा उजागर होने के बाद पार्टी दो-तिहाई बहुमत के साथ विजयी परचम लहराने में कामयाब रही।

हरियाणा विधानसभा चुनाव से उत्साहित भाजपा ने दिल्ली में बूथ स्तर पर गंभीरता से काम किया। दूसरा, दिल्ली में इस बार कांग्रेस पार्टी मजबूती से चुनाव मैदान में उतरी और उसने आम आदमी पार्टी के मतों का बंटवारा कर दिया।

दरअसल, कई ऐसे कारण रहे जिसके चलते दिल्ली के लोगों ने इस बार के विधानसभा चुनाव में आम आदमी पार्टी को नकार दिया। यह हम भलीभांति जानते हैं कि आम आदमी पार्टी का उद्भव वर्ष 2012 में भ्रष्टाचार के खिलाफ चलाए गए एक आंदोलन के बाद हुआ था। इसी आधार पर आप खुद को कट्टर ईमानदार कहती थी। लेकिन मनी लहंड्रिंग के आरोप में पहले दिल्ली सरकार के मंत्री सत्येंद्र जैन को जेल जाना पड़ा। वहीं, दिल्ली शराब नीति घोटाले के आरोप में पार्टी मुखिया केजरीवाल, पूर्व उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया और राज्यसभा सांसद संजय सिंह तक को जेल जाना पड़ा। लोगों के बीच इस बात का स्पष्ट रूप से संदेश गया कि जो पार्टी स्वयं को कट्टर ईमानदार कहकर सत्ता में आई थी, वह भ्रष्टाचार के दलदल में आकंठ डूबी हुई है।

दूसरा, केजरीवाल हमेशा वीआईपी कल्चर पर सवाल उठाते रहे हैं। वह स्वयं को और आप को आम आदमी कहकर पुकारते रहे। पहले वह साधारण कार से चलते थे लेकिन धीरे-धीरे उनका काफिला लक्जरी गाड़ियों से भरा रहा। साथ ही मुख्यमंत्री आवास में को लेकर उन पर ही सवाल खड़े हो गए। भाजपा-कांग्रेस ने उनके आवास को शीश महल कहते हुए आप की जमकर घेराबंदी की। शराब घोटाले में भ्रष्टाचार संबंधी लगातार बढ़ते दबाव को भांपकर सितंबर 2024 में केजरीवाल ने मुख्यमंत्री पद

से इस्तीफा तक दे दिया था। बड़े नेताओं का जेल जाना और अदालती शर्तों से बंधे रहना चुनाव से पहले बड़ा टर्निंग पइंट रहा और इसका सीधा फायदा भाजपा को मतदान के रूप में मिला।

सरकार की मुफ्त योजनाएं और डबल इंजन सरकार का नैरेटिव : भाजपा ने हाल के वर्षों में राज्य के सभी चुनावों में मुफ्त योजनाओं का एलान किया और इसका सीधा लाभ उसे राजस्थान, हरियाणा, मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र में मिला। लेकिन दिल्ली में भाजपा का मुकाबला ऐसी पार्टी से था जो दिल्ली की जनता को पहले से ही मुफ्तखोरी की आदत डाल चुकी थी। भाजपा को आप की इसी मजबूत कड़ी को काटने के लिए यह घोषणा करनी पड़ी कि दिल्ली में जो फ्री योजनाएं चल रही हैं, उनको पार्टी जारी रखेगी। इसके अलावा वह महिलाओं को 2500 रुपये, 500 रुपये में गैस सिलेंडर भी देगी।

भाजपा 'मोदी की गारंटी' के मामले में लोगों को भरोसा दिलाने में रही कामयाब रही और दिल्ली की दुर्दशा को सुधाने का एलान किया। भाजपा ने यहां वर्ष 2014 की रणनीति पर एक बार फिर से पीएम मोदी के चेहरे पर चुनाव लड़ा। भाजपा ने हर बार की तरह इस बार भी अपने मुख्यमंत्री पद के चेहरे का एलान नहीं किया, जबकि आम आदमी पार्टी लगातार उस पर इस बात का हमला करती रही कि भाजपा में सीएम पद का चेहरा कौन है? इसका नतीजा यह हुआ कि भाजपा ने 70 में से 48 सीटें जीत कर दिल्ली में अपनी सरकार बना ली।

यमुना की सफाई, बदहाल सड़कें और गंदा पानी जैसे मुद्दों को भाजपा ने ठोस तरीके से उठाया। दरअसल, दिल्ली की सत्ता पर काबिज होने से पहले से केजरीवाल और अन्य आप नेता यमुना की सफाई के मुद्दे को

दिल्ली शराब नीति घोटाले के आरोप में पार्टी मुखिया केजरीवाल, पूर्व उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया और राज्यसभा सांसद संजय सिंह तक को जेल जाना पड़ा। लोगों के बीच इस बात का स्पष्ट रूप से संदेश गया कि जो पार्टी स्वयं को कट्टर ईमानदार कहकर सत्ता में आई थी, वह भ्रष्टाचार के दलदल में आकंठ डूबी हुई है।

उठाते रहे। इस मुद्दे पर भाजपा ने आप सरकार को हर मंच से आड़े हाथों लिया और उसके दावों पर कड़ा प्रहार किया। उसने इस पर भी चोट किया कि केजरीवाल ने कहा था कि अगर मैं यमुना को साफ करने में कामयाब नहीं रहा तो दिल्लीवालों मुझे वोट मत देना। इस बयान से केजरीवाल और आप दोनों की छवि धूमिल हुई। केजरीवाल द्वारा यमुना के जहरीले पानी का मुद्दा भी उन पर भारी पड़ा। उन्होंने इसका ठीकरा हरियाणा सरकार पर फोड़ना चाहा। पर वह पानी को जहरीला बनाने वाले नैरेटिव को गढ़ने में पूरी तरह विफल हो गए। इसके अलावा दिल्ली के घरों तक पहुंचने वाला गंदा पानी, खस्ताहाल सड़कें और बारिश के मौसम में जलभराव के मुद्दे ने भी केजरीवाल की मुश्किलें बढ़ा दीं।

हरियाणा विधानसभा चुनाव से उत्साहित भाजपा ने दिल्ली में बूथ स्तर पर गंभीरता से काम किया। दूसरा, दिल्ली में इस बार कांग्रेस पार्टी ने मजबूती से चुनाव मैदान में उतरी और उसने आम आदमी पार्टी के मतों का बंटवारा कर दिया। हालांकि पिछले तीन विधानसभा चुनाव में कांग्रेस एक भी सीट नहीं जीती। लेकिन वर्ष 2015 में कांग्रेस को 9.7 प्रतिशत, 2020 में 4.3 प्रतिशत वोट मिले। इस बार यह आंकड़ा 6.62 प्रतिशत रहा। कांग्रेस ने विधानसभा चुनाव में अपनी पूरी ताकत झोंकी। इसका असर परिणामों में दिखाई दे रहा है। कांग्रेस का वोट शेयर बढ़ने की वजह से आप को नुकसान हुआ और भाजपा को कमल खिलाने में और आसानी हो गई। दरअसल, भाजपा दिल्ली में सरकार इसलिए भी बनाने के लिए आतुर थी क्योंकि वह वर्ष 2036 में ओलम्पिक खेल भारत में कराना चाहती है।

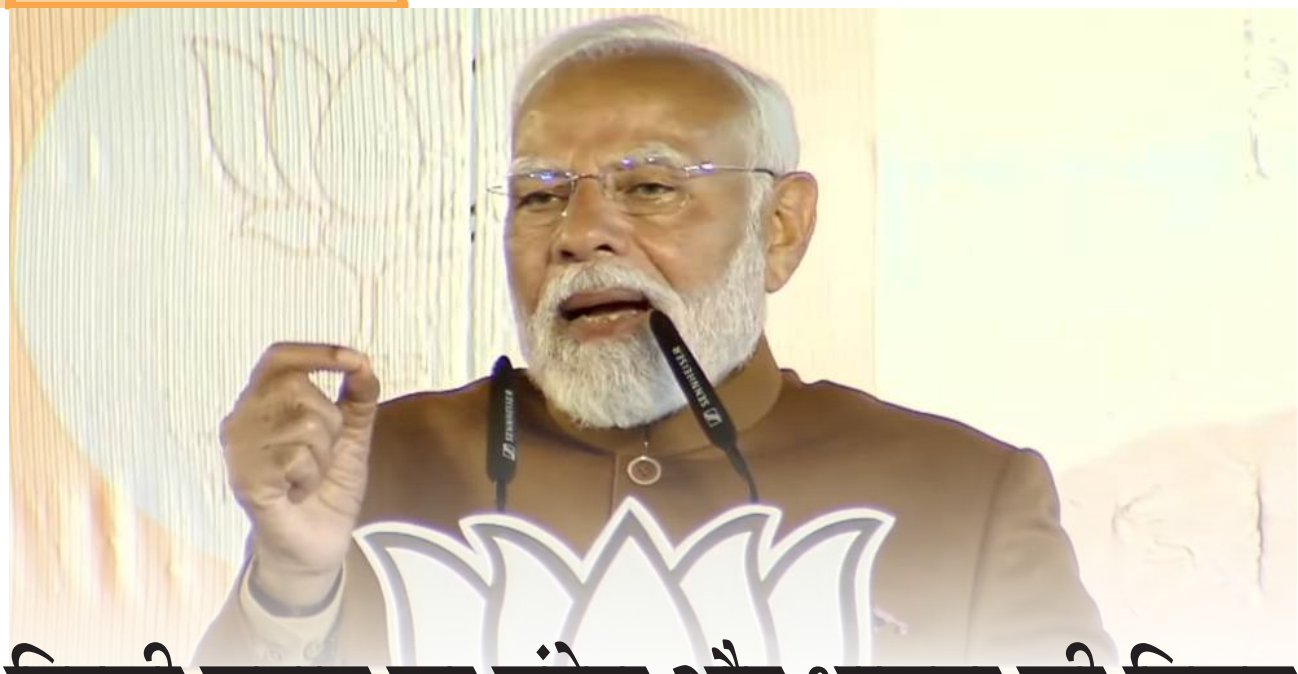

दिल्ली चुनाव का संदेश और भाजपा की विजय

डॉ. अभिषेक प्रताप सिंह
सहायक प्रोफेसर देशबंधु कॉलेज, दिल्ली विवि.

संगठन में शक्ति का मूल मंत्र भाजपा एक विलक्षण प्रतिभा है जिसका लाभ उसे मिला। दूसरी और आम आदमी पार्टी और कांग्रेस का संगठन और विचार दोनों ही जर्जर अवस्था में लोगों को आकर्षित करने में सफल रहे।

किसी भी लोकतांत्रिक देश में आम चुनाव हो या फिर जिला, प्रांतीय या फिर पंचायती चुनाव उस सब का महत्व है। राष्ट्रीय स्तर पर होने वाले आम चुनाव देश की राजनीतिक दिशा नेतृत्व और आर्थिक नीतियों को नई दिशा और गति देते हैं, वही प्रांत और पंचायत के चुनाव भी अपने-अपने क्षेत्र में विकास की नई रूपरेखा को कैसे तय किया जाए इस बारे में एक दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति होते हैं। भारत जैसे विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र में चुनावी प्रक्रिया और चुनावी गरिमा का सम्मान एक राष्ट्रीय कर्तव्य है जिसका हमें हमेशा निर्वहन करना चाहिए। हाल ही में संपन्न हुए राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली के विधानसभा चुनाव भी अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण है। इनका मतलब दिल्ली के विकास एजेंडा से आगे बढ़कर देश की राजनीति और और उसमें किया जा रहे प्रयोग के नजरिए से बहुत महत्वपूर्ण है। चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने जीत दर्ज करके राजधानी दिल्ली को डबल इंजन के सक्षम नेतृत्व से जुड़ा है इसके पीछे दिल्ली के लोगों की इच्छा और एक सकारात्मक राजनीतिक प्रवृत्ति के प्रति अपना विश्वास दोनों ही महत्वपूर्ण है।

आम आदमी पार्टी और केजरीवाल का पतन : अगर हम पिछले दो दशकों की भारतीय राजनीति को देखें तो उसमें आम आदमी पार्टी की स्थापना और उसके नेता अरविंद केजरीवाल ने एक नई राजनीतिक प्रवृत्ति के आधार पर अपनी राजनीति शुरू की और उसके प्रति देश और दिल्ली के लोगों ने अपना पूरा विश्वास जताया। लेकिन अपनी सत्तालोलुप्ता के चक्कर में और अपनी राजनीतिक महात्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए एक बड़े सामाजिक आंदोलन की अभिव्यक्ति के रूप में निकली आम आदमी पार्टी को अरविंद केजरीवाल की व्यक्तिगत राजनीति ने बहुत पीछे धकेल दिया।

वैसे इस प्रकार का टेंट कोई पहली बार नहीं देखा गया अगर हम इतिहास में मुड़कर देखें तो भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन से निकली कांग्रेस पार्टी भी धीरे-धीरे चलकर नेहरू गांधी परिवार की सत्ता प्राप्ति और परिवारवादी राजनीति के चक्कर में पड़कर अपनी राजनीतिक प्रासंगिकता को खो चुकी है। वहीं दूसरी ओर थोड़ा आगे बढ़कर देखें तो जेपी आंदोलन से निकली जनता दल और उसकी सहयोगी पार्टियों ने भी सत्ता प्राप्ति की चाहत में अपने राजनीतिक सिद्धांत राजनीतिक सूचना और सभी मर्यादाओं को तोड़कर उस आंदोलन की गरिमा और उसके उद्देश्यों की तिलांजलि

दी। इसके अलावा कुछ छोटे-मोटे क्षेत्रीय आंदोलन से निकली पार्टियां चाहे वह द्रविड़ आंदोलन से निकली डीएमके हो मराठा मानुष के सिद्धांत पर निकली शिवसेना हो ने भी आगे चलकर परिवारवाद और सत्ता की प्राप्ति के लिए अपने सिद्धांत और संस्थापकों के मूल सिद्धांतों को बलि दे दी। ऐसा नहीं है कि उनकी इस नकारात्मकता को भारतीय जनमानस ने पढ़ा नहीं, लेकिन जब तक इसको आम लोगों ने जाना समझा तब तक लंबे समय तक सत्ता में रहकर इन पार्टियों ने समाज और राष्ट्र का बहुत नुकसान कर दिया था।

मर्यादा और नैतिकता की बात करने वाले अरविंद केजरीवाल 177 दिन तक तिहाड़ जेल में रहे फिर भी उन्होंने मुख्यमंत्री के पद से इस्तीफा नहीं दिया। लोकतांत्रिक राजनीति की बात करने वाले केजरीवाल की राजनीति पूरी तरीके से एकाधिकार वादी रही। इस सबके अलावा दिल्ली दंगों में हिंदू मूल्य और हिंदू विरोधी बयान देने के कारण भी हिंदू जनमानस का केजरीवाल से मुंह बंद हो गया। केजरीवाल की स्थिति रोम के राजा नीरो वाली हो गई कि जब दिल्ली जल रहा था तो यह व्यक्ति शीश महल में शराब घोटाले के पैसे गिन रहा था। अंत में जनता ने केजरीवाल और उनकी गंदी राजनीति को सिरे से निकाल दिया।

कमल खिला और भाजपा की विजय हुई

पिछले दो दशकों से दिल्ली की राजनीति से बाहर रही भारतीय जनता पार्टी ने न सिर्फ इन चुनाव में आम आदमी पार्टी को बाईस सीटों पर समेट दिया बल्कि डबल इंजन की सरकार के फायदे और सफलताओं के प्रति भी दिल्ली की जनता ने अपना विश्वास जताया। भाजपा की बड़ी जीत के कई कारण रहे हैं। सबसे पहली बात की दिल्ली के मतदाताओं पर प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व और क्षमता पर विश्वास का यह एक ऐतिहासिक उदाहरण है। प्रधानमंत्री मोदी ने दिल्ली में तीन बड़ी रैलियां की और उन सभी इलाकों में भाजपा को सफलता मिली। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने जमीनी स्तर पर जो काम किया उसके साथ मोदी मैजिक के जुड़ जाने से भाजपा को

केजरीवाल की स्थिति रोम के राजा नीरो वाली हो गई कि जब दिल्ली जल रहा था तो यह व्यक्ति शीश महल में शराब घोटाले के पैसे गिन रहा था। अंत में जनता ने केजरीवाल और उनकी गंदी राजनीति को सिरे से निकाल दिया।

जबरदस्त चुनावी सफलता मिली।

दूसरी प्रमुख बात रही की महिला मतदाताओं ने लगातार भाजपा और मोदी के नेतृत्व में अपना सहयोग और समर्थन दिया। उत्तर प्रदेश जैसे राज्य में योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में आज एक बेहतर कानून व्यवस्था का राज है जिसकी आवश्यकता दिल्ली जैसे राज्य में भी है अगर आंकड़ों की बात करें तो दिल्ली के जिन 40 सीटों पर पुरुषों से ज्यादा महिलाओं ने मतदान किया वहां की एक तिहाई सीट भाजपा की झोली में गई। महिला शक्ति लगातार भाजपा के पीछे खड़ी रही जिसका उसे चुनावी लाभ भी हुआ। बेटी बचाओ कन्या विद्या धन उज्ज्वला योजना जैसे अनेकों सरकारी कार्यक्रमों ने लगातार महिलाओं को भाजपा की तरफ जोड़ा है इसका उदाहरण दिल्ली विधानसभा चुनाव में भी देखने को मिला।

तीसरी प्रमुख बात की भाजपा ने चुनाव में जबरदस्त सांगठनिक क्षमता का उपयोग किया पार्टी स्तर पर 14 सबसे अधिक नुक्कड़ जनसभाएं और 3500 से ज्यादा छोटी और बड़ी संगठन कार्यकर्ताओं की बैठक की गई। इसके अलावा पार्टी ने 650 से अधिक आम जनसभाओं का आयोजन किया। प्रमुख इलाकों में रोड शो के माध्यम से भाजपा की नीति और घोषणा पत्र को लोगों के बीच पहुंचाया गया। आज भारतीय राजनीति में भाजपा का संगठन ही उसकी ताकत है जिसका उदाहरण हमें दिल्ली विधानसभा चुनाव में देखने को मिला। संगठन में शक्ति का मूल मंत्र भाजपा एक विलक्षण प्रतिभा है जिसका लाभ उसे मिला। दूसरी और आम आदमी पार्टी और कांग्रेस का संगठन और विचार दोनों ही जर्जर अवस्था में लोगों को आकर्षित करने में सफल रहे। लोगों ने भाजपा के विकास मॉडल और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रति अपना भरपूर समर्थन दिया।

इसके साथ ही दिल्ली के जीवन से जुड़ी पवित्र यमुना नदी में गंदगी का स्तर भी भाजपा ने लगातार उठाया। बड़ी संख्या में दिल्ली के लोग यमुना के जल पर जीवन यापन के लिए निर्भर हैं लेकिन यमुना की सफाई के लिए केजरीवाल की सरकार ने नौटंकी के अलावा कुछ नहीं किया। दिल्ली जल बोर्ड में व्याप्त भ्रष्टाचार भी इसी से जुड़ा मुद्दा है जी सब के प्रति भाजपा ने अपनी नीति स्पष्ट की और लोगों को आश्वासन दिया।

दिल्ली के चुनाव ने मुफ्त रेवड़ियां बांटने के केजरीवाल मॉडल के खिलाफ भाजपा के मोदी मॉडल को चुना जिसका आधार सबका साथ सबका विकास और सब का विश्वास है। आज पूरे भारत में एक इंफ्रास्ट्रक्चर कांति हो रही है लेकिन दिल्ली से छूटा है क्योंकि आप सरकार ने कुछ नहीं किया। जाहिर है दिल्ली के लोगों ने भाजपा को चुना और अपना भरपूर सहयोग दिया।

सरकार बनाने के बाद भाजपा के सामने अपने घोषणा पत्र को लागू करना दिल्ली में प्रदूषण से लड़ाई लड़ना, शिक्षा स्वास्थ्य सड़कों की खराब स्थिति, दिल्ली में ट्रैफिक की समस्या, यमुना नदी की सफाई और कच्ची कॉलोनी का स्थाईकरण जैसे कई प्रमुख मुद्दे और चुनौतियां हैं। अगर भाजपा सरकार इन गंभीर मुद्दों पर एक बेहतर परिणाम आम लोगों के हित में पूरा कर सकेगी तो निश्चित ही आने वाले वर्षों में उसे दिल्ली के लोगों का समर्थन मिलता रहेगा। कैसे एक आदर्श दिल्ली एक भाई मुक्त दिल्ली एक अपराध मुक्त दिल्ली एक विकसित दिल्ली का निर्माण हो यही अब भाजपा का ध्येय होना चाहिए। विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए विकसित दिल्ली के सपने को भी पूरा करना होगा।

जलवायु परिवर्तन और हिमालय

भारत में ग्लेशियर और हिम पिघलने के प्रभाव

डॉ. रूपेन्द्र सिंह
सामाजिक विज्ञान संस्थाान, जवाहरलाल नेहरू विवि.

हिमालय भारत की पारिस्थितिकी और सांस्कृतिक धरोहर का एक अभिन्न अंग है। जलवायु परिवर्तन के कारण ग्लेशियरों और हिम के तेजी से पिघलने से जल सुरक्षा, पारिस्थितिक संतुलन और आर्थिक स्थिरता पर गंभीर प्रभाव पड़ रहा है। इस चुनौती से निपटने के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान, सतत विकास, प्रभावी नीति निर्माण और सामुदायिक भागीदारी की आवश्यकता है।

हिमालय, जिसे अक्सर 'तीसरा ध्रुव' कहा जाता है, पृथ्वी के पर्यावरण संतुलन का एक महत्वपूर्ण घटक है। यह पांच देशों में फैला हुआ है और ध्रुवीय क्षेत्रों के बाहर सबसे बड़ा मीठे पानी का भंडार है। भारत में, हिमालय न केवल प्राकृतिक सुंदरता का प्रतीक है, बल्कि यह लाखों लोगों के लिए जीवन रेखा भी है, जो जल आपूर्ति, ऊर्जा उत्पादन और जैव विविधता को समर्थन प्रदान करता है। हालांकि, जलवायु परिवर्तन के बढ़ते प्रभाव इस नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र को गंभीर रूप से प्रभावित कर रहे हैं, जिससे ग्लेशियरों और हिम के तेजी से पिघलने के कारण दूरगामी परिणाम हो रहे हैं।

हिमालय भारत की पारिस्थितिकी और सांस्कृतिक धरोहर का एक अभिन्न अंग है। जलवायु परिवर्तन के कारण ग्लेशियरों और हिम के तेजी से पिघलने से जल सुरक्षा, पारिस्थितिक संतुलन और आर्थिक स्थिरता पर गंभीर प्रभाव पड़ रहा है। इस चुनौती से निपटने के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान, सतत विकास, प्रभावी नीति निर्माण और सामुदायिक भागीदारी की आवश्यकता है। यदि हम एक सक्रिय और एकीकृत दृष्टिकोण अपनाते हैं, तो हम हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र को भावी पीढ़ियों के लिए संरक्षित रख सकते हैं।

ट्रांस-हिमालयी हिमनद उन्नीसवीं सदी के मध्य से ही आकर्षण का केंद्र रहे हैं। हिमनदों के महत्व को देखते हुए, कई हिमनदीय अध्ययन किए जा रहे हैं और इन्हें राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय वित्तीय एजेंसियों द्वारा समर्थन मिल रहा है। हिमालय और ट्रांस-हिमालयी हिमनदों के विभिन्न प्रकारों का विश्लेषण 1812 से मेयोवस्की और जेश्के (1979) द्वारा किया गया, और उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि विभिन्न प्रकार के हिमनदों में उतार-चढ़ाव के इतिहास भिन्न होते हैं। लगभग 1850 से, अनुदैर्ध्य (longitudinal) हिमनद आमतौर पर पीछे हटने की स्थिति में रहे हैं। हालांकि, 1900 से 1930 के बीच, हिमनदों की स्थिर स्थिति या उनका आगे बढ़ना प्रमुख था।

दूसरी ओर, अनुप्रस्थ (transverse) हिमनद आमतौर पर 1850 से 1870 तक पीछे हटते रहे, जबकि 1870-1910 और 1920-1930 के दौरान अग्रसर होने और स्थिर रहने की प्रवृत्ति प्रमुख रही। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि अनुप्रस्थ हिमनदों में पाए जाने वाले जटिल रिकॉर्ड उनके छोटे आकार, आने वाली वायुमंडलीय परिसंचरण प्रणाली (atmospheric circulation pattern) के लंबवत प्रवाह, और अत्यधिक तीव्र ढलान के कारण हो सकते हैं। उन्होंने यह भी निष्कर्ष निकाला कि हिमालय और ट्रांस-हिमालयी हिमनदों के उतार-चढ़ाव के रिकॉर्ड में अंतर पाया जाता है। उनके अध्ययन के अनुसार, अधिकांश हिमालयी हिमनद 1850 से पीछे हटने की स्थिति में हैं, जबकि ट्रांस-हिमालयी हिमनद (कराकोरम के दक्षिणी भाग में) 1850 से 1880 के बीच या तो पीछे हट रहे थे या आगे बढ़ रहे थे। 1880 से 1940 के बीच पीछे हटने और स्थिर स्थिति का लगभग समान प्रभाव देखा गया, लेकिन 1880 से 1940 के दौरान एक बार फिर से हिमनदों के

आगे बढ़ने की प्रवृत्ति देखी गई, जो 1940 के बाद फिर से पीछे हटने की स्थिति में आ गई। इसी निष्कर्ष को तेवारी (1971) ने अपने हिमालयी हिमनदों पर किए गए अध्ययन में भी दोहराया।

हिमालयी ग्लेशियर प्रणाली की समझ

हिमालयी ग्लेशियर भारतीय उपमहाद्वीप की प्रमुख नदी प्रणालियों, जैसे गंगा, ब्रह्मपुत्र और सिंधु नदियों के लिए महत्वपूर्ण हैं। ये ग्लेशियर प्राकृतिक जलाशय के रूप में कार्य करते हैं, जो पिघलकर कृषि, पेयजल आपूर्ति और जलविद्युत उत्पादन को समर्थन देते हैं। बर्फ और बर्फ के संचय (अभिवृद्धि) और गलन (पिघलने और वाष्पीकरण) के बीच संतुलन इन ग्लेशियरों के स्वास्थ्य को निर्धारित करता है। जलवायु परिवर्तन इस संतुलन को बाधित कर रहा है, जिससे पिघलने की दर में वृद्धि और बर्फ के द्रव्यमान में कमी हो रही है।

तेजी से ग्लेशियर पिघलने के प्रमाण

हाल के शोधों से पता चला है कि हिमालयी ग्लेशियरों के पिघलने की दर में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। अध्ययन दर्शाते हैं कि ये ग्लेशियर पिछले 400-700 वर्षों में 40 प्रतिशत तक सिकुड़ चुके हैं। विशेष रूप से, 2010 के बाद से हिमालयी ग्लेशियरों की बर्फ पिघलने की दर पिछले दशक की तुलना में 65 प्रतिशत तेज हो गई है। यह तेजी से गिरावट वैश्विक तापमान में वृद्धि और बदलते वर्षा पैटर्न के कारण हो रही है।

भविष्य के परिदृश्य : हिमालयी ग्लेशियरों का भविष्य गंभीर चिंता का विषय है। वैज्ञानिकों के अनुसार, यदि वैश्विक तापमान को 1.5°C तक सीमित किया जाता है, तो भी हिमालयी ग्लेशियरों का 30 प्रतिशत से 50 प्रतिशत तक नुकसान हो सकता है। यदि तापमान वृद्धि अधिक होती है, तो यह नुकसान 75 प्रतिशत तक पहुंच सकता है। ग्लेशियरों में इस प्रकार की कमी से जल उपलब्धता पर गंभीर प्रभाव पड़ेगा, विशेष रूप से गर्मी और शुष्क मौसम में, जब इनका पानी नदियों को पोषित करता है।

क्षेत्रीय जलवायु परिवर्तन : भारतीय हिमालय क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन के स्पष्ट संकेत दिखाई दे रहे हैं। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग के आंकड़ों के अनुसार, 1951 से 2010 तक औसत अधिकतम तापमान में गिरावट देखी गई है। यह प्रवृत्ति, वर्षा पैटर्न में बदलाव के साथ, हिम और बर्फ संचय को प्रभावित करती है, जिससे ग्लेशियरों का स्वास्थ्य प्रभावित होता है। मानसूनी पैटर्न में परिवर्तन और पश्चिमी विक्षोभ (वेस्टर्न डिस्टर्बेंस) का प्रभाव क्षेत्रीय जलवायु को और अधिक जटिल बना देता है।

सामाजिक और आर्थिक प्रभाव :हिमालयी ग्लेशियरों के पिघलने का सामाजिक और आर्थिक प्रभाव भी गंभीर है। हिमालयी क्षेत्र और निचले इलाकों में रहने वाले समुदायों को जल उपलब्धता में बदलाव का सामना करना पड़ रहा है, जिससे कृषि और आजीविका प्रभावित हो रही है। उदाहरण के लिए, कश्मीर में कई जलस्रोत और नदियों की सहायक धाराएं सूख गई हैं, जिससे जल संकट गहराता जा रहा है।

पारिस्थितिक प्रभाव : हिमालयी क्षेत्र की पारिस्थितिकी जल, बर्फ और बर्फ के संतुलन से जुड़ी हुई है। हिमालयी ग्लेशियरों के पिघलने से झीलों का निर्माण होता है, जो अगर फट जाएं तो निचले क्षेत्रों में विनाशकारी बाढ़ आ सकती है। इसके अलावा, जल प्रवाह और तापमान में परिवर्तन जलीय पारिस्थितिक तंत्र को प्रभावित कर सकता है, जिससे जैव विविधता को नुकसान हो सकता है।

जलवायु परिवर्तन से निपटने के उपाय

हिमालय में जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने के लिए विभिन्न रणनीतियों को अपनाने की आवश्यकता है-

हाल के शोधों से पता चला है कि हिमालयी ग्लेशियरों के पिघलने की दर में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। अध्ययन दर्शाते हैं कि ये ग्लेशियर पिछले 400-700 वर्षों में 40 प्रतिशत तक सिकुड़ चुके हैं।

1.**निगरानी और अनुसंधान** : हिमालयी ग्लेशियरों और जलवायु परिवर्तन को समझने के लिए विस्तृत अध्ययन और निगरानी की आवश्यकता है, जिससे नीतियों को प्रभावी ढंग से लागू किया जा सके।

2. **सतत जल प्रबंधन** : जल संरक्षण तकनीकों को अपनाना, वर्षा जल संचयन को बढ़ावा देना और टिकाऊ सिंचाई प्रणालियों को विकसित करना आवश्यक है।

3. **आपदा प्रबंधन :** हिमनदी झीलों के फटने जैसी आपदाओं को रोकने के लिए चेतावनी प्रणाली और मजबूत बुनियादी ढांचे की आवश्यकता है।

4. **समुदाय की भागीदारी** : स्थानीय समुदायों को जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए शिक्षित और सशक्त बनाना चाहिए ताकि वे टिकाऊ जीवनशैली अपना सकें।

5. **नीतिगत हस्तक्षेप** : सरकार को ग्लोबल वार्मिंग को कम करने के लिए ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन पर नियंत्रण और काले कार्बन (ब्लैक कार्बन) जमाव को रोकने के उपाय अपनाने चाहिए।

निष्कर्ष : जलवायु परिवर्तन के प्रभाव से हिमनदों के सिकुड़ने की समस्या गंभीर रूप ले रही है, और पूरी दुनिया हिमनदों के पिघलने की वास्तविकता को स्वीकार कर रही है। आंकड़ों के अनुसार, 1956 से वैश्विक स्तर पर 'संदर्भ हिमनदों' के द्रव्यमान संतुलन (mass balance) में परिवर्तन शुरू हो गया है।

वर्ष, 2010 में भारत सरकार राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन कार्य योजना के तहत 'हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने के लिए राष्ट्रीय मिशन' (NMSHE) की शुरुआत की, क्योंकि हिमालय में हिमनदों का विशाल भंडार है, जो गंगा, सिंधु और ब्रह्मपुत्र जैसी अनवरत बहने वाली नदियों के लिए खनिज व स्वच्छ जल का सबसे बड़ा स्रोत है। इस मिशन का मुख्य उद्देश्य हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र की स्वास्थ्य स्थिति का निरंतर आकलन करना है। यह आकलन नीति निर्माताओं और राज्यों को टिकाऊ विकास के लिए नीतियों के निर्माण और उनके कार्यान्वयन में सहायता करता है।

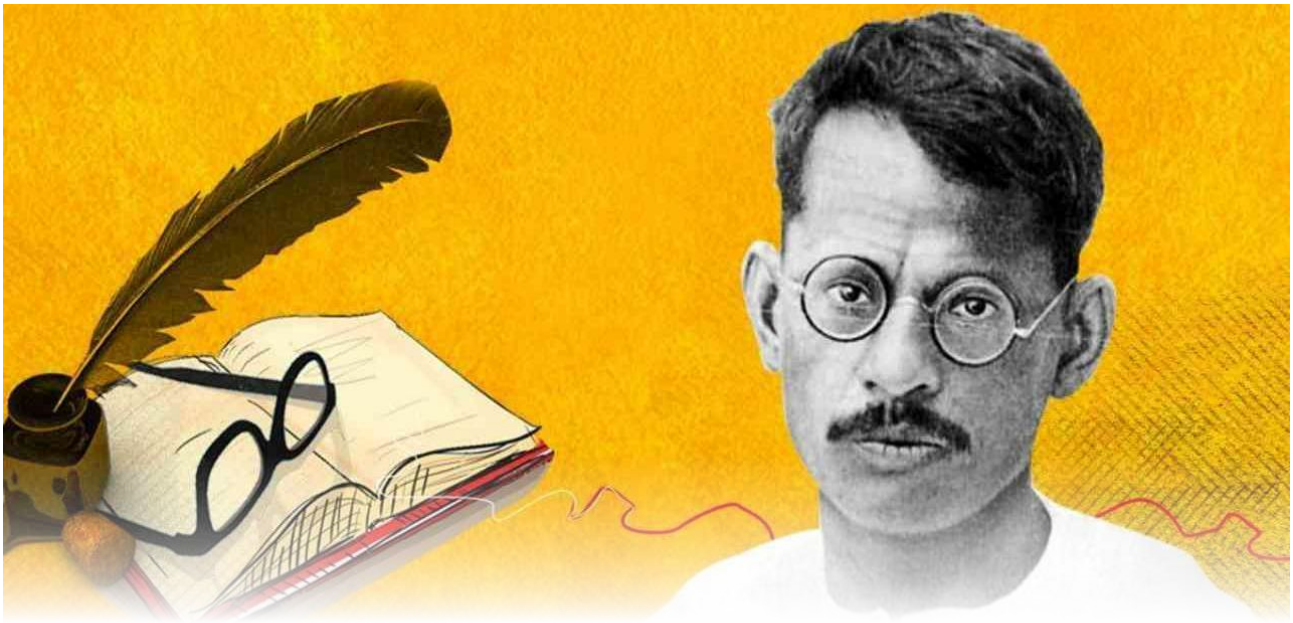

गणेश शंकर विद्यार्थी का जीवन पत्रकारिता के लिए प्रकाश पुंज

रिमझिम निगम
एचआर प्रोफेशनल

पत्रकारिता में गणेश शंकर विद्यार्थी का प्रवेश केवल एक पेशे के रूप में नहीं था, बल्कि यह उनके लिए एक बुलावा था। वे मानते थे कि शब्दों की शक्ति से समाज में बदलाव लाया जा सकता है।

गणेश शंकर विद्यार्थी, भारत के स्वतंत्रता संग्राम के एक प्रमुख व्यक्तित्व, त्याग, साहस और न्याय तथा स्वतंत्रता के प्रति अटूट प्रतिबद्धता के प्रतीक थे। प्रत्येक वर्ष, गणेश शंकर विद्यार्थी बलिदान दिवस उनके निस्वार्थ योगदान को सम्मानित करने और राष्ट्र को उनके आदर्शों की याद दिलाने के लिए मनाया जाता है। उनका जीवन केवल औपनिवेशिक शोषण के खिलाफ प्रतिरोध की यात्रा ही नहीं था, बल्कि सामाजिक सद्भाव और न्याय के प्रति उनके समर्पण का प्रमाण भी था। उन्होंने अपने पत्रकारीय जीवन में जिस तरीके से अपनी कलम चलाई, वह कलम तलवार से भी अधिक शक्तिशाली बन गई। आज समाज एवं राष्ट्र के लिए किए गए कार्य इतिहास में स्वर्णाक्षरों में दर्ज हैं।

26 अक्टूबर 1890 को उत्तर प्रदेश के फतेहपुर जिले के हथगांव में जन्मे गणेश शंकर विद्यार्थी ने पीढ़ियों को प्रेरित करने के लिए जन्म लिया था। बचपन से ही उनमें न्याय के प्रति स्वाभाविक झुकाव और वंचितों के संघर्षों को समझने की सहानुभूति दिखाई देती थी। एक साधारण परिवार में पले-बढ़े, उनके पिता जय नारायण एक शिक्षक थे, जिन्होंने उनमें मजबूत मूल्य और शिक्षा की नींव स्थापित की। विद्यार्थी की जिज्ञासु सोच और ज्ञान की भूख ने उन्हें अंततः पत्रकारिता की दुनिया में ला दिया, जहां उन्होंने पत्रकारिता में अपना अदभुत योगदान दिया।

पत्रकारिता में उनका प्रवेश केवल एक पेशे के रूप में नहीं था, बल्कि यह उनके लिए एक बुलावा था। वे मानते थे कि शब्दों की शक्ति से समाज में बदलाव लाया जा सकता है। 1913 में, उन्होंने 'प्रताप' नामक एक क्रांतिकारी हिंदी समाचार-पत्र की शुरुआत की, जो दबे-कुचले लोगों की आवाज बन गया। 'प्रताप' के माध्यम से विद्यार्थी ने निडरता से ब्रिटिश शासन द्वारा किए गए अन्याय को उजागर किया और जमींदारों और औद्योगिक मालिकों द्वारा किसानों और

मजदूरों के शोषण को सामने रखा।

उनकी लेखनी स्पष्टता, साहस और सत्य के प्रति अडिग प्रतिबद्धता से भरपूर थी। उन्होंने गरीबी, जाति भेदभाव और सांप्रदायिक असमानता जैसे मुद्दों को उजागर कर समाज को इन बुराइयों के खिलाफ लड़ने के लिए प्रेरित किया। विद्यार्थी की पत्रकारिता केवल आलोचना तक सीमित नहीं थी, यह क्रियात्मक प्रेरणा और आशा को जगाने का माध्यम भी थी। वह मानते थे कि स्वतंत्र प्रेस एक स्वतंत्र राष्ट्र की आधारशिला है, और उन्होंने औपनिवेशिक अधिकारियों से कई बार गिरफ्तारी और धमकियों का सामना करने के बावजूद अपने मिशन में दृढ़ता बनाए रखी।

गणेश शंकर विद्यार्थी का प्रभाव पत्रकारिता के क्षेत्र से कहीं आगे तक फैला था। वे भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के एक सक्रिय प्रतिभागी थे और महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू और सुभाष चंद्र बोस जैसे महान नेताओं के साथ काम करते थे। वर्ष 1920 के दशक के असहयोग आंदोलन के दौरान, उन्होंने जनता को ब्रिटिश वस्तुओं और संस्थानों का बहिष्कार करने के लिए प्रेरित किया। वह केवल एक नेता ही नहीं, बल्कि समाज के विभिन्न वर्गों के बीच एक सेतु भी थे। वह दृढ़ता से मानते थे कि भारत की स्वतंत्रता केवल उसके विविध समुदायों की एकता से प्राप्त की जा सकती है। उन्होंने सांप्रदायिक सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए अथक प्रयास किए और हिंदू-मुस्लिम एकता पर जोर दिया। उनके भाषणों और लेखों में अकसर समावेशिता का संदेश होता था, जो लोगों से धार्मिक और सामाजिक विभाजनों से ऊपर उठने का आग्रह करता था।

एक सच्चे नेता की वास्तविक पहचान दूसरों के कल्याण को अपने स्वार्थ से ऊपर रखने में होती है। गणेश शंकर विद्यार्थी ने इस गुण को अपने जीवन में पूरी तरह से दर्शाया। 25 मार्च 1931 को, भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव की शहादत के ठीक एक दिन बाद, कानपुर में सांप्रदायिक दंगे भड़क उठे। यह शहर, जो क्रांतिकारी गतिविधियों का केंद्र रहा था, लेकिन यह नफरत और हिंसा का मैदान बन गया। इस अराजकता के बीच, विद्यार्थी ने शांति बहाल करने का जिम्मा उठाया। उन्होंने दंगा प्रभावित क्षेत्रों में प्रवेश किया, अपनी जान जोखिम में डालकर दोनों समुदायों के लोगों को बचाने का प्रयास किया। उन्होंने कमजोरों को बचाया, घायलों की मदद की और युद्धरत गुटों के बीच मध्यस्थता करने का प्रयास किया। इस निस्वार्थ साहस और मानवता के कार्य में, वह उसी हिंसा के शिकार हो गए, जिसे वे समाप्त करना चाहते थे। गणेश शंकर विद्यार्थी शहीद हो गए। उन्होंने एकता और करुणा के आदर्शों की रक्षा के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया।

गणेश शंकर विद्यार्थी का जीवन और शहादत आज भी पूरे भारत में अनगिनत लोगों को प्रेरित करती है। न्याय के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता, सत्य की उनकी निर्भीक खोज और उनका बलिदान उन लोगों के लिए एक मार्गदर्शक प्रकाश बनता है, जो दुनिया को एक बेहतर स्थान बनाने का प्रयास करते हैं। उनके बलिदान दिवस का पालन केवल उनकी शहादत की स्मृति ही नहीं, बल्कि उन मूल्यों के उत्सव का भी प्रतीक है, जिनके लिए वे खड़े हुए थे। यह दिन उनके आदर्शों पर विचार करने और न्याय, समानता और सामुदायिक सद्भाव के उद्देश्य के प्रति खुद को समर्पित करने का है।

1913 में, उन्होंने 'प्रताप' नामक एक क्रांतिकारी हिंदी समाचार-पत्र की शुरुआत की, जो दबे-कुचले लोगों की आवाज बन गया। 'प्रताप' के माध्यम से विद्यार्थी ने निडरता से ब्रिटिश शासन द्वारा किए गए अन्याय को उजागर किया

आज दुनिया में, जहां अलगाव अकसर एकता पर हावी हो जाता है और सत्य को कभी-कभी गलत जानकारी के तहत दबा दिया जाता है, गणेश शंकर विद्यार्थी का जीवन गहरे सबक देता है। वह हमें सिखाते हैं कि साहस भय की अनुपस्थिति नहीं है, बल्कि उस पर विजय है। वह हमें याद दिलाते हैं कि सच्चा नेतृत्व दूसरों की सेवा में निहित है, भले ही इसके लिए अपने जीवन की कीमत चुकानी पड़े। विद्यार्थी का सांप्रदायिक सद्भाव पर जोर विशेष रूप से वर्तमान समय में प्रासंगिक है। जैसे-जैसे समाज ध्रुवीकरण और पूर्वाग्रह से जूझ रहे हैं, उनकी एकता और सहानुभूति का संदेश नफरत और वैमनस्य के लिए एक शक्तिशाली प्रतिरूप है। उनका जीवन हमें हमारी भिन्नताओं से ऊपर उठने और शांति और समृद्धि के सामान्य लक्ष्य की दिशा में काम करने के लिए प्रेरित करता है।

गणेश शंकर विद्यार्थी की यात्रा, एक साधारण परिवार में जन्मे एक बालक से एक निर्भीक पत्रकार, एक जननेता और अंततः एक शहीद बनने तक, असाधारण साहस और विश्वास की कहानी है। उनका जीवन प्रतिरोध, करुणा और बलिदान की एक संगति थी, और उनकी विरासत उन लोगों के दिलों में गूंजती रहती है, जो न्याय और स्वतंत्रता के आदर्शों में विश्वास करते हैं। जब हम इस महान आत्मा को श्रद्धांजलि देते हैं, उनके जीवन से प्रेरणा लें और एक ऐसे समाज और राष्ट्र का निर्माण करें जो सत्य, न्याय और सद्भाव को महत्व देता हो। उनका बलिदान हमें मानवता और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक बेहतर भविष्य बनाने की हमारी सामूहिक जिम्मेदारी की याद दिलाता है। उनका स्मरण कर, हम उस सच्चे अर्थ को सम्मानित करते हैं जो वास्तव में स्वतंत्र होने का प्रतीक है।

पीएम मोदी की विदेश यात्रा

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की फरवरी 2025 में फ्रांस और अमेरिका की यात्राएं भारत के अंतरराष्ट्रीय संबंधों को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण रही हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपनी दो दिवसीय अमेरिका यात्रा के दौरान उन्होंने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के साथ उच्च स्तरीय द्विपक्षीय वार्ता की, जिसमें व्यापार, रक्षा, सुरक्षा, ऊर्जा और प्रौद्योगिकी सहित कई अहम मुद्दों पर चर्चा की। प्रधानमंत्री मोदी 12 फरवरी दिन बुधवार को फ्रांस से अमेरिका पहुंचे थे और बृहस्पतिवार को भारतीय समयानुसार 14 फरवरी शुक्रवार को राष्ट्रपति ट्रंप ने उनकी मेजबानी की। यह ट्रंप के दूसरे कार्यकाल की पहली द्विपक्षीय वार्ता थी। दोनों नेताओं ने भारत-अमेरिका संबंधों को और मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण फैसले लिए।

प्रधानमंत्री मोदी ने अमेरिका के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार माइकल वाल्ट्ज और राष्ट्रीय खुफिया निदेशक तुलसी गबार्ड से भी मुलाकात की। भारत और अमेरिका ने रक्षा, ऊर्जा और अत्याधुनिक तकनीक के क्षेत्रों में अपने सहयोग को व्यापक करने का निर्णय लिया। इसके अलावा, दोनों देशों ने वैश्विक और क्षेत्रीय मुद्दों पर विचारों का आदान-प्रदान किया। दोनों नेताओं ने व्यापार घाटा कम करने, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, सेमीकंडक्टर और ऊर्जा आपूर्ति बढ़ाने जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर सहमति जताई। सीमा विवाद को खत्म करने के लिए अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भारत और चीन के बीच सीमा पर जारी झड़पों को काफी हिंसक बताते हुए इस विवाद को खत्म करने के लिए मध्यस्थता करने की अपील की।

ट्रंप ने घोषणा की कि अमेरिका भारत को अरबों डॉलर के रक्षा उपकरण बेचेगा और भविष्य में भारत को एफ-35 स्टील्थ फाइटर जेट्स देने की दिशा में भी काम किया जाएगा। उन्होंने बताया कि 2017 में उनके प्रशासन ने

क्वाड सुरक्षा साझेदारी को फिर से सक्रिय किया, जिसमें भारत, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और जापान शामिल हैं। उन्होंने कहा कि यह सहयोग इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में शांति बनाए रखने के लिए बहुत जरूरी है। ट्रंप ने कहा कि दोनों देश कट्टरपंथी इस्लामी आतंकवाद से निपटने के लिए पहले से ज्यादा मजबूती से साथ काम करेंगे।

पीएम मोदी की फ्रांस यात्रा से भारत-फ्रांस संबंधों में मजबूती आई है। एआई सहयोग, परमाणु ऊर्जा और नवाचार सहित 10 समझौतों को अंतिम रूप दिया गया। दोनों देशों ने भारत-फ्रांस नवाचार वर्ष 2026 की शुरुआत की और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में सहयोग को और मजबूत किया।

द्विपक्षीय आर्थिक संबंधों को नई ऊंचाइयों पर ले जाने की अपनी प्रतिबद्धता को रेखांकित करते हुए, विशेष रूप से प्रौद्योगिकी, परमाणु ऊर्जा और नवाचार के क्षेत्र में, भारत और फ्रांस ने पीएम मोदी की ऐतिहासिक यात्रा के दौरान 10 समझौता समझौतों पर हस्ताक्षर किए।

हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापनों में एआई पर भारत-फ्रांस घोषणा, भारत-फ्रांस नवाचार वर्ष 2026 के लिए लोगों का शुभारंभ और डिजिटल विज्ञान के लिए भारत-फ्रांस केंद्र की स्थापना शामिल है। फ्रांसीसी स्टार्टअप इनक्यूबेटर 'स्टेशन एफ' में 10 भारतीय स्टार्टअप की मेजबानी के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए गए।

अन्य समझौता ज्ञापनों में उन्नत मॉड्यूलर रिएक्टरों और छोटे मॉड्यूलर रिएक्टरों पर साझेदारी की स्थापना पर आशय की घोषणा शामिल है; परमाणु ऊर्जा विभाग (डीएई), भारत और सीएई, फ्रांस के बीच ग्लोबल सेंटर फॉर न्यूक्लियर एनर्जी पार्टनरशिप के साथ सहयोग के संबंध में समझौता ज्ञापन का नवीनीकरण और जीसीएनईपी इंडिया और इंस्टीट्यूट फहर न्यूक्लियर साइंस एंड टेक्नोलॉजी फ्रांस के बीच सहयोग के संबंध में भारत के डीएई और फ्रांस के सीईए के बीच एक समझौता। दोनों देशों ने त्रिकोणीय विकास सहयोग पर एक संयुक्त आशय घोषणा पर भी हस्ताक्षर किए।

पीएम मोदी ने संयुक्त रूप से मार्सिले में भारत के महावाणिज्य दूतावास का उद्घाटन किया और अंतरराष्ट्रीय थर्मोन्यूक्लियर प्रायोगिक रिएक्टर सुविधा का भी दौरा किया। पीएम मोदी ने फ्रांस द्वारा एआई एक्शन समिट के सफल आयोजन पर राष्ट्रपति मैक्रों को बधाई दी और फ्रांस ने अगले एआई समिट की मेजबानी के लिए भारत का स्वागत किया।

अंतरराष्ट्रीय जगत में भारत की स्थिति

2025 में भारत की अंतरराष्ट्रीय स्थिति पर आंकड़ों के आधार पर विस्तृत विश्लेषण को समझने के लिए हम विभिन्न महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करेंगे- आर्थिक स्थिति, जनसंख्या और शहरीकरण, प्रौद्योगिकी और नवाचार, सैन्य और रक्षा, जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण, और अंतरराष्ट्रीय कूटनीति।

आर्थिक स्थिति : भारत का आर्थिक परिदृश्य 2025 तक एक महत्वपूर्ण मोड़ पर पहुंच सकता है। 2025 तक, भारत की GDP (सकल घरेलू उत्पाद) +5 ट्रिलियन तक पहुंचने का अनुमान है। भारत की अर्थव्यवस्था के विकास की दर साल दर साल ६-७ प्रतिशत हो सकती है। यह अनुमानित वृद्धि भारत को वैश्विक अर्थव्यवस्था के शीर्ष तीन देशों में शामिल कर सकती है, जिसमें संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन प्रमुख होंगे।

भारत की प्रति व्यक्ति आय 2025 तक +2,500–+3,000 तक पहुंचने का अनुमान है, जो पिछले दशकों में हुई प्रगति को दर्शाता है। हालांकि, यह आंकड़ा अभी भी कई अन्य विकसित देशों की तुलना में कम है, लेकिन भारत में आर्थिक सुधारों और विकास के कारण इस क्षेत्र में निरंतर सुधार हो रहा है।

भारत का कुल निर्यात 2025 तक +750–+800 बिलियन तक पहुंचने की संभावना है। इसकी वजह से भारत की वैश्विक व्यापार में भूमिका बढ़ेगी। इसके प्रमुख निर्यात क्षेत्रों में सूचना प्रौद्योगिकी (IT), रासायनिक उत्पाद, वस्त्र, और कृषि उत्पाद शामिल हैं।

भारत की आर्थिक वृद्धि और वृद्धि दर से यह स्पष्ट होता है कि वह जल्द ही एक प्रमुख वैश्विक आर्थिक शक्ति बन सकता है।

भारत की जनसंख्या 2025 तक 1.45 बिलियन तक पहुंचने का अनुमान है, जो उसे चीन के बाद सबसे बड़ा देश बना देगा। यह जनसंख्या वृद्धि भारत के लिए कई अवसर और चुनौतियां दोनों पैदा करेगी। 2025 तक भारत में शहरीकरण की दर 40 प्रतिशत से 45 प्रतिशत तक हो सकती है। इसके परिणामस्वरूप भारतीय शहरों में रहने वाली जनसंख्या में बढ़ोतरी होगी। बढ़ती जनसंख्या और शहरीकरण के कारण भारत को स्वास्थ्य, शिक्षा, परिवहन, और अन्य बुनियादी ढांचे के क्षेत्रों में बड़े सुधारों की आवश्यकता होगी।

2025 तक, भारत में 50,000 से अधिक स्टार्टअप्स हो सकते हैं। भारत का आईटी निर्यात +150 बिलियन तक पहुंच सकता है। यह भारत को वैश्विक टेक्नोलॉजी हब बनाने में मदद करेगा। भारत में डेटा साइंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और ब्लॉकचेन जैसे क्षेत्रों में भी तेजी से नवाचार हो रहा है। भारत का स्पेस मिशन भी बहुत सफल हो सकता है। भारतीय अंतरिक्ष एजेंसी ISRO ने कई महत्वपूर्ण मिशनों की योजना बनाई है, जिनमें चंद्रयान, गगनयान (मानव अंतरिक्ष उड़ान), और मंगल मिशन शामिल हैं।

भारत का रक्षा बजट 2025 तक +75–+80 बिलियन तक पहुंच सकता है। यह उसके सैन्य खर्च और सुरक्षा को मजबूत करने का संकेत देता है। भारत ने अपनी रक्षा जरूरतों को पूरा करने के लिए आत्मनिर्भर रक्षा उत्पादन के तहत कई कदम उठाए हैं। 2025 तक भारत का रक्षा उत्पादन बढ़कर +25–+30 बिलियन तक हो सकता है। भारत की सैन्य ताकत में वृद्धि के परिणामस्वरूप यह वैश्विक सुरक्षा मामलों में एक प्रमुख खिलाड़ी बन सकता है, खासकर एशिया-प्रशांत क्षेत्र में।

भारत ने 2025 तक 175 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा का लक्ष्य रखा है। इसमें सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा प्रमुख स्थान पर हैं। भारत 2030 तक 500 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता हासिल करने का लक्ष्य भी रखता है। भारत ने अपनी CO2 उत्सर्जन को 2030 तक 33 प्रतिशत से 35 प्रतिशत तक कम करने का लक्ष्य रखा है।

भारत की कूटनीतिक स्थिति 2025 के अंत तक और मजबूत हो सकती है। भारत लगातार सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता के लिए अपनी स्थिति को मजबूत कर रहा है। 2025 तक भारत को यह सदस्यता मिल सकती है। भारत इन बहुपक्षीय संगठनों के माध्यम से अपनी कूटनीतिक स्थिति को बढ़ा सकता है।

आंकड़ों के आधार पर, 2025 में भारत की स्थिति एक प्रमुख वैश्विक शक्ति के रूप में उभर सकती है।

मैदान में छा गए उत्तराखंड के खिलाड़ी 103 पदक जीतकर रचा इतिहास

राष्ट्रीय खेलों में उत्तराखंड को पहली बार मौका मिला। उत्तराखंड ने शानदार प्रदर्शन कर नया कीर्तिमान बनाया है। अंतिम दिन एक स्वर्ण और दो रजत पदक मिलने से राज्य ने पदकों का शतक लगाया। इसमें 24 स्वर्ण, 35 रजत और 42 कांस्य पदक शामिल है। राज्य खेल फुटबाल और नेटबाल सहित कई खेलों में पहली बार मैदान में उतरे उत्तराखंड के खिलाड़ी राष्ट्रीय खेलों में एक नई पहचान मिली। मॉर्डन पेंटाथलान में राज्य को छह स्वर्ण पदक सहित रिकार्ड 14 पदक मिले। वहीं, नेटबाल, लॉनबाल एवं कुछ अन्य खेलों में भी खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन कर राष्ट्रीय स्तर पर अपनी छाप छोड़ी।

उत्तराखंड में पहली बार हुए राष्ट्रीय खेलों में राज्य के मेजबान होने की वजह से फुटबाल, लान टेनिस, लानबाल, नेटबाल, मॉर्डन पेंटाथलान सहित कुछ अन्य खेलों में राज्य की टीम को राष्ट्रीय खेलों में हिस्सा लेने का मौका मिला। जिसमें फुटबाल टीम ने राज्य को रजत पदक दिलाया। नेटबाल में राज्य को दो रजत व एक कांस्य पदक मिला, वेटलिफ्टिंग में भी एक कांस्य पदक मिला। लान बाल में राज्य ने स्वर्ण पदक जीता। लॉनटेनिस में कांस्य और योगासन में एक स्वर्ण, तीन रजत व एक कांस्य पदक जीतकर राज्य के खिलाड़ियों ने साबित कर दिया कि किसी भी राज्य की टीम से कमतर नहीं हैं।

राष्ट्रीय खेलों में उत्तराखंड ने 103 पदक जीतकर शानदार प्रदर्शन किया। खेलों के भव्य समापन पर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने भी राज्य के विजेता खिलाड़ियों के प्रदर्शन को सराहा, लेकिन राज्य के सामने अब अगले साल होने वाले 39 वें राष्ट्रीय खेलों में इस प्रदर्शन को दोहराने की चुनौती है।

राष्ट्रीय खेलों में उत्तराखंड ने पहली बार 101 पदक जीतने का कीर्तिमान बनाया है। वुशु में राज्य की बेटी ज्योति ने पहला पदक दिलाया। जिसके बाद बॉक्सिंग, एथलेटिक्स, मॉडर्न पेंटाथलॉन, जूडो, कैनोइंग और कयाकिंग, योगासन, लॉनबाल और कुश्ती में खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन कर धमाल मचाया। पदक विजेताओं को सरकार अब पुरस्कार के रूप में तय धनराशि और नौकरी देगी।

राष्ट्रीय खेलों में उत्तराखंड का सबसे शानदार प्रदर्शन मॉडर्न पेंटाथलॉन में रहा। जिसमें ममता खत्री, मोनिका, मंजू गोस्वामी, सक्षम सिंह, नीरज नेगी, लाल सिंह ने स्वर्ण पदक जीता। इसमें राज्य को छह स्वर्ण सहित सबसे अधिक 14 पदक मिले। कैनोइंग और कयाकिंग में पांच, बॉक्सिंग में तीन, एथलेटिक्स, ताइक्वांडो और जूडो में दो-दो स्वर्ण पदक मिले।

बॉक्सिंग में राज्य के कपिल पोखरियाल, निवेदिता कार्की और नरेंद्र सिंह ने अपने पंच से सोना जीता। वहीं, एथलेटिक्स में अंकिता का सबसे बेहतर प्रदर्शन रहा। इस स्पर्धा में राज्य को पहला स्वर्ण पदक दिलाने वाली अंकिता ध्यानी ने महिला वर्ग की 3000 और 5000 मीटर रेस में एक-एक स्वर्ण पदक जीता। जबकि 10 हजार मीटर रेस में रजत पदक दिलाया।

कुश्ती में उत्तम राणा, महिला कयाकिंग में सोनिया व रोजी देवी, मीरा दास, प्रभात कुमार, जूड़ो में सिद्धार्थ रावत, ताइक्वांडों में पूजा, लहनबाल में उतत्कृष्ट द्विवेदी, योगासन में रोहित यादव, शशांक शर्मा, प्रियांशु, अजय वर्मा, कैनोइंग व कयाकिंग में रीना सैन और वुशु में अचोम तपस सहित कई खिलाड़ियों ने राज्य के लिए सोने, चांदी की चमक बिखेरी।

राष्ट्रीय खेलों में पदक विजेता खिलाड़ियों को तय धनराशि के रूप में छह से लेकर 32 लाख रुपये तक मिलें। कांस्य पदक विजेता को छह लाख रुपये की धनराशि पुरस्कार के रूप में दी गई। जबकि स्वर्ण पदक विजेता को प्रति स्वर्ण पदक 12 लाख रुपये मिलें। एथलेटिक्स में सबसे शानदार प्रदर्शन अंकिता ध्यानी का रहा। जिसने दो स्वर्ण और एक रजत पदक जीता है। जिसे तय पुरस्कार की धनराशि के रूप में 32 लाख रुपये मिलें।

BHAURAV DEVRAS SARASWATI VIDYA MANDIR

- Digital Library
- Atal Tinkering Laboratory
- Well Equipped Laboratories
- All Sports Activities
- Studio for Smart Education
- Value Based Education
- Easy Transport options from most suburbs
- Unique & Innovative Programs
- Modern Resources & Technologies

H-107, Sector-12, NOIDA
E-Mail: bdsvidyamandir@gmail.com
Contact No. 0120-4238317, 9910665195

RNI No. : UPHIN/2023/84344 Postal Reg No. : DL (DS)-61/MP/2023-24-25

Nirala World Residency Private Limited

Corp. Office:- OFFICE NO-21 LOGIX INFOTECH PARK, D-5 , SECTOR-59, 201301

Site Office :- GH-03A,Sector-2 Greater Noida (West), Uttar Pradesh

For Sales Enquiries:- +91 9212131476

0120-4823000 | Sales@niralaworld.com | www.niralaworld.com